* अध्याय-चौथा *

** "और इन्सान मर गया" में चित्रित विभाजन की समस्या :-

सन् १९४८ में लिखित "और इन्सान मर गया" रामानंदसागर का एक श्रेष्ठ एवं यथार्थवादी उपन्यास है। जिसे चार खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड में लेखकने विभाजनसे उत्पन्न लाहौर की स्थिति, हिन्दू और मुसलमानों की प्रतिशोध की भावना का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। द्वितीय खण्डमें लाहौर और पंजाब के भयानक अग्निकाण्ड का चित्रण किया गया है, जिसमें न केवल मकान ही जले, बल्कि इन्सान तथा उसकी मानवीयता किसप्रकार जलकर राख हुई थी, इसका यथार्थ चित्रण किया गया है। तृतीय खण्ड में शरणार्थियोंकी दयनीय अवस्था को स्पष्ट किया गया है। चौथे खण्ड में लेखकने उस इन्सान का चित्रण किया है जो विभाजन के चपेट में आकर जीवित होकर भी मर गया था; उसमें कुछ भी संवेदना बाकी नही रह गयी थी। वह एक जिन्दा लाश की तरह जी रहा था॥

** प्रथम खण्ड :-

प्रस्तुत उपन्यास में देश के बँटवारे के समय हुए साम्प्रदायिक विभीषिका भारत और पाकिस्तान की यातना, जघन्य कुत्सित घटनाएँ आदि का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। घृणा, प्रतिशोध और साम्प्रदायिकताग्रस्त मानवों की मन:स्थिति उनके आवेग, भय और विवशता का सजीव और मर्मस्पर्शी वर्णन किया गया है। कथा का प्रारम्भ कर्फ्यू ऑर्डर के कारण लाहौर शहर में फैली नीरव शांति या स्तब्धता को चित्रित करता है। लेखकने मालरोड के एक कैफे की उड़ी - उड़ी रंगतद्वारा भी उसे स्पष्ट किया है।

सारे लाहौर में दंगा - फ़साद छिड़ गया था। सभी के मनमें घृणा और प्रतिशोध की भावना पनप रही थी। इस समय उपन्यास के नायक आनंद को अपने चारों ओर आँसुओंका समुद दिखायी दे रहा था; जो विधवाओं और अनाथों की कोटि - कोटि अश्रुओंका समुद्र था॥ उस समुद्र के चप्पे - चप्पे पर खून के लाल फव्वारे नृत्य कर रहे थे। लेखक को यहाँ यह बताना है कि, विभाजनसे उत्पन्न इन दंगों - फ़सादों के कारण लोगोंके लहूसे सारा लाहौर शहर खून का समुद्र बना हुआ था, जिसमें लोगोंके खून के लाल फव्वारे नाच रहे थे। लाहौर में मुसलमानोंद्वारा मुहल्लों में आग लगाना, ...

उसे बुझानेवालों पर पुलिस की मदद द्वारा गोलियाँ चलाना पानी की जगह पेट्रोल फेंकना, ऐसे में अजीत नामक युवक द्वारा चौबीस घण्टे आगसे लड़ते रहना, और अन्तमें एक मुस्लिम मकान को आगसे बचाने के प्रयत्न में उन्हीं लोगों की गोली का शिकार होना अजीत की शादी हुए तीन महीने ही हुए थे उस उपन्यास के नायक को अजीत के माथेसे गरल - गरल करता हुआ लहू और उसकी पत्नी के कलाइयोंसे टूटी हुई लाल चुड़ियों के टुकड़े एक लाल फव्वारे से प्रतीत हुए।

लेखकने उपन्यास के प्रथम खण्ड में लाहोर की एक गलीमें स्थित उन लोगों का चित्रण किया है जो ऊपर से तो मानवीय भावना का प्रदर्शन करते हैं क्योंकि उन्हें अपने जानोमाल की रक्षा करनी है ; पर अन्दर से तो उनमें पाशविकता भरी है। सभी लोग सिर्फ अपना काम निकालने की सोचते हैं, दूसरों के दुःख से उन्हें कोई मतलब नहीं। लेखकने सेठ किशोरलाल के चरित्रद्वारा यह स्पष्ट किया है। सेठ किशोर लाल जो पहले मुहल्लें के लोगों की तरफ देखते तक नहीं थे, वे ही इस वक्त उन्हें अपने घरमें हमेशा बिठा लेते थे उनकी खातिर करते थे क्योंकि उन्हें अपने लाखों रुपयों की रक्षा करनी थी। लेखक कहता है, रुपया हिन्दुओं की कमजोरी है, लालचने सबको स्वार्थी बना दिया है।[1]

लेखकने प्रस्तुत उपन्यास में इन सारी परिस्थितियों को कथोपकथन के माध्यमसे ही स्पष्ट किया है। लोगों के एक - दूसरेसे हुए वार्तालाप ही लाहोर की स्थिति को स्पष्ट करते हैं। सरदारी लाल द्वारा कथित रंग महल में हुए सिख और मुसलमानोंकी लड़ाई का वृतान्त बड़ा ही सजीव लगता है। - "एक सिख ने उन्नी बाजारमें तीन मुसलमानों को मार डाला है, और पाँच घायल हुए हैं। पुलिस अभी - अभी लाशें हमारी बाजार से लेकर गयी है। इसके बाद मुसलमानों ने लाठियों और कुल्हा-डोंसे लैस होकर रंगमहलपर हमला कर दिया। जब हिन्दू मुकाबले को निकले तो मुस्लिम पुलिस ने, जो पहले ही से मकानों पर छिपी बैठी थी, हिन्दुओं पर गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। इतनेमें गोलियों की आवाज सुनकर, सरदारी लाल ने कहा "यह देखो थ्री नॉट थ्री की राइफिलें इस्तेमाल की जा रही हैं।" "किसीने कहा गोलियाँ की दोनों ओर से आवाज आ रही है ; ..... सरदारी लाल ने तुरन्त कहा, - "हाँ - हाँ, दोनों तरफसे इधर भी बाला बंदूक लिए बैठा है। और भी कई हिन्दू उसकी मदद को पहुँच रहे हैं।"[2]

विभाजन के वक्त मानवीयता लोप हो चुकी थी, बचपन के दोस्त भी कट्टर शत्रु लगने लगे थे। लेखकने इस तथ्य को सरदारी लालद्वारा और एक कथन से व्यक्त किया है - उन्होंने एक मुसलमान और हिन्दू दो मित्रों की बात कहीं जो बचपन के मित्र हैं, जवानी में भी उनकी मित्रता दृढ है, पर आज जब वह हिन्दू उसके घर पनाह लेने गया तो उसने उसे अन्दर बुलाया उसको अदबसे बिठाया और कहा, बात यह है कि हमारे गाँव में सिखों और हिन्दुओं ने मेरे दो भाइयों को कत्ल कर दिया है और जबसे यह सूचना आयी है मैंने प्रतिज्ञा कर रखी है कि मुझे सबसे पहले जो चार हिन्दू मिलेंगे, उन्हें इस छुरीसे कत्ल कर दूँगा"[3] और सरदारी लालने यह भी बताया कि किसप्रकार उस हिन्दू मित्रने धोखेसे अपने मुस्लिम मित्र की हत्या करके अपनी जान बचायी।

एक मुस्लिम मेजिस्ट्रेट पर किये गये हमले के असफल प्रयत्न के बारेमें भी बैठक में चर्चा होती है। - "मगर उसकी किस्मत अच्छी दिखाई देती है। यह तीसरा हमला है। लेकिन अबके भी बाल - बाल बच गया है।" दूसरे ने कहा "कितने अफसोस की बात है कि हम उस व्यक्ति का कुछ नहीं कर सकते, जिसने चार दिन पहले चैलेन्ज देकर हिन्दुओं की सबसे बड़ी मार्केट तक जलवा दी।" एकने कहा,- तुम जानते नहीं, यह सब गवर्नर की शरारत है, नहीं तो इस मामूली मैजिस्ट्रेट की क्या ताकत है। इधर हिन्दू जल रहे थे और उधर उसने कर्फ्यू भंग करने के जुर्म में आग बुझानेवालों पर गोलियाँ बरसाना शुरू कर दिया। क्या कोई और व्यक्ति यह कर सकता था। उसे उसी समय पदच्युत न कर दिया जाता। यह सब अँग्रेजों की चाल है। वह तुम्हें आजादी के बदले यही कुछ देंगे।[4] लेखकने उपर्युक्त कथन से अँग्रेजों की कूटनीति को स्पष्ट किया है।

लेखकने उपन्यास के नायक आनंद द्वारा लाहोरे की वास्तविक स्थिति को उभारा है। - उसपर दूज का चाँद एक रोगी स्त्री की तरह कमज़ोर सितारों की चमक बढ़ गयी थी। उस समय कमानों के ऊपर थोडे - थोडे अन्तरपर सब्ज बत्तियाँ लगायी गई थीं, जिसे फसाद के वक्त सिग्नल के तारपर इस्तेमाल किया जाता था, खतरा पैदा होते ही उसमें लाल बत्ती जल जाती, "इससे सारे शहर में एक तेज हरकत पैदा होती, लाठियाँ, बर्छे, गुप्त स्थानों में से सामान निकालकर युवा लोग तैयार हो जाते। बच्चे चौककर अपने माताओं कि छातियों से चिमट जाते, स्त्रियाँ अपने पहलू खाली पाकर अँधेरे में निगाहें गाडे सोचने लगती थीं।"[5] और ऐसे समय में "अल्लाहो अकबर - हर - हर महादेव" के नारों की भयानक गूँज आकाश को छूकर लौट आती थी। लेखक ने इन नारों

के बारमें कहा है "उन दिनों अल्लाह और महादेव के नाम सुनकर लोग इसतरह कॉप उठते, जैसे वह भगवान नहीं कोई जिन्न - भूत हों।" [६]

ऐसे वक्त आनंद को वह सब्ज बत्तियाँ लाहोर की आँखें लगती हैं, जो बूचड़खाने में बंधी हुई भेड़ों की तरह सहमी - सहमी सी दृष्टिसे कसाई का रास्ता निहार रही हों। और उस पर लगी [illegible] ही किसी आँखसे टपका हुआ खून काएक आँसू लगता है॥ लेखक आनंद के इस विचारमंथन द्वारा लाहोर के हर आदमी की मानसिकता को स्पष्ट करता है।

लेखक बाहरी प्रदर्शनोंपर निर्धारित जातीयता को व नहीं मानते। उन्होंने कोमियत के दर्दनाक खोखलेपन पर कड़ा व्यंग्य किया है। - उपन्यास का नायक आनंद यात्रा करते समय जब जालंधर स्टेशन पहुँचा तब पाता कि वहाँ रावल पिण्डी के इलाकोंसे आनेवाले शरणार्थियोंके लिये किसी ने लंगर खोला था,। स्वयंसेवक अपनी कौम के लोगों की बड़ी सेवा कर रहे थे, और इस भीड़ में एक व्यक्ति ऐसा था जिसकी दाढ़ी मुसलमानों ने जबर्दस्ती मुस्लिम ढंग से काटी थी, इसलिए उसे स्वयंसेवक पंक्तिमें से बाहर निकाल देते थे, वह ~~व्यक्ति~~व्यक्ति एक कोने में खड़ा होकर अपने प्याले को अपनेही अश्रुसें भरने लगा। इतनेमें एक व्यक्तिने बताया की "यह भी हमारा हमकोम ही है। मुसलमानों ने इसके केश और दाढ़ी काट दी है, परंतु यह वीर अपनी कौम की खातिर कई प्रकार के लालच ठुकराकर उनके यहाँसे भाग आया है। [७] . . . . लेखक कहता है, - कितनी/~~[illegible]~~/ खोखली नींव थी इस जातीयता की, ~~[illegible]~~ किसी के हृदयके भावों का कोई मोल नहीं; मोल है तो केवल बाहरी भेस का।[८]

विभाजन के वक्त लोग बहुत स्वार्थी हो गये थे हिन्दु और मुसलमान दोनों में कुछ ~~हमे~~ भी अंतर नहीं था, लेखकने आनंद के विचारमंथन द्वारा इसे स्पष्ट किया है। - आनंद सोचता है कि, - जिसके व्यक्ति आग बुझाने की कोशिश में शहीद हो जानेवाले अजीत को डरपोक समझते हैं, और स्वयं इसान के लहू की प्यासी बर्छियाँ लिये फिर रहे हैं, और वे उस समय तक नोजवानों को दूध पिलाने के वादे करते थे जबतक उनकी जायदाद को खतरा था, जो हिन्दू पुलिस की पिकेट बिठाने के लिये हजारों रुपये खर्च करते हैं, पर उसकी उन्हें खबर ~~[illegible]~~ नहीं जो शहीद अजीत की पत्नी है, एक नोकरानी - सा जीवन जी रही है। इतनाही नही उसके रूप और यौवन की घिनौनी बाते

करते हैं। आनंद सोचता है, "अगर यह मेरी कौम है । तो उनमें और उस मुसलमान में क्या अंतर है जिसने उस व्यक्ति को गोली मार दी, जो मुसलमानों ही के मकान को लगी हुई आग को बुझा रहा था। ९

विभाजन के समय लाहौर में विभिन्न पार्टियों के लोग अपने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये अफवाहों का सहारा लेकर युवकों को भड़का रहे थे। प्रस्तुत उपन्यास में भी, लेखक ने इसको स्पष्ट किया है। - आनंद की गली के युवकों को भी एक व्यक्तिने अपने को महासभा का लिडर बताता है, बताया था कि, - "हमने बिहार में नोआखाली और कलकत्ते का पूरा - पूरा बदला ले लिया है, वहाँ हमने म्लेच्छों की लाशोंसे कुएँ भर दिये हैं, और फिर उन पर थोडी - थोडी मिट्टी डालकर उन्हें ~~धर्ती/में/~~ धरती में समतल कर दिया है।और आप लोग है कि उस दिन हमारी एक ~~पार्टीने~~ पार्टीने मुसलमानों के गढ़ को आग लगाने के लिए आपके मुहल्ले से केवल रास्ता माँगा था, तो आपने इन्कार कर दिया। . . . . . तब नवयुवको के यह बतानेपर कि, उस समय बूढोंने विरोध किया था उसने कहा, "इस समय सारा भारतवर्ष तुम नवयुवकों की ओर देख रहा है। अब तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम यहाँ अपने भावे को नीचा न होने दो। शत्रुओं की ओर देखो, उनमेंसे आज हरेक मुसलमान है। चाहे वह हाइकोर्ट का जज है या तुम्हारा दोस्त, परन्तु वह पहले मुसलमान है, और कुछ बाद में, परंतु कितने शोक की बात है कि तुम लोग अभीतक कास्मोपालिटन - इज़्म के चक्कर में पड़े हुए हो। क्या ~~तुममें~~ तुममेंसे एक भी हिन्दु नहीं है ? " १०

इसतरह उस व्यक्तिने ~~इस~~ उन युवकोंकी कौम को ललकारा था, ताकि उनमें जोश पैदा हो और उन युवकोंने भी फैसला कर डाला कि, हिन्दुओंके ~~शहर~~ मुहल्लोंमें जहाँ - जहाँ मुसलमान का मकान हो उसे जला दिया जाय। उन्होंने अपने मुहल्ले में बाजार के कोनेपर स्थित शम्सदीन "नामक मुसलमान के घर को जलाने का फैसला किया, और आनंद के विरोध के बावजूद भी उसकी अनुपस्थितिमें अपना कार्य पूरा किया, उस मकान को जला ही डाला। इससे लेखक को यह बताना है कि, उस समय जबकि सारे देश की जिम्मेदारी उन युवकोंके उपर थी, वे ही अफवाहों में फँसकर तथा अपने आपको सोचने का मौका ही न देकर दूसरोंकी बतायी हुई झूठी राहपर चले जा रहे थे। लेखकने इस निराशा के समय में आनंद को एक आशा की कीरण के रूपमें प्रस्तुत किया है।

लाहौर में पहले इन फसादोंके कारण लोग शहर छोड़ कर भाग रहे थे। ..... लेखक ने इसका बड़ा वर्णन मार्मिक किया है। - रास्तेपरसे चलनेवाले इन लोगोंकी एक नदी बह रही थी, "जिसमें बाद आयी हुई थी, और उस पर कोई बाँध नहीं बाँधा जा सकता था।"[११] उनके पास पूँजी के रूपमें केवल आगसे टेढ़े - मेढ़े हो गये ट्रंक, अधजले कपड़ोंकी गठड़ियाँ, कुछ बर्तनोंकी बोरियाँ थीं। स्त्रियों के बिखरे बाल, बच्चोंके मैले चेहरे और मर्दों के फटे कपड़े यही उनकी निशानियाँ थीं। उनका केवल एकही लक्ष्य था कि किसी भी तरह रेल्वे स्टेशनतक पहुँचना, वहाँसे कोई भी गाड़ी उन्हें इस शहरसे कहीं दूर ले जायेगी इस आशासे वे चले जा रहे थे, क्योंकि उनकी अपनी धरती ही उनके बच्चों के खून की प्यासी हो गयी थी। जिस धरतीपर उनका अपना बचपन, जवानी की बहारें, पुरखों की निशानियाँ थीं, वे इन सबको छोड़कर भागे चले जा रहे थे।

ये लोग आपनी जान बचाने के खातिर भाग रहे थे, उन्हें यह नहीं मालूम था कि बाहर भी उनकी मौत राह ताक रही है - इन काफीलोंपर भी बम फेंके जा रहे थे, बल्कि स्टेशन के उस वेटिंग - रूम में भी दो बम फेंके जा चुके थे, जिसमें हजारों शरणार्थी जमा थे। इतना सब होने पर भी ये सब एक अस्पष्ट - सी आशा के सहारे बहे चले जा रहे थे।

इस समय सबके मनमें केवल प्रतिशोध की भावना ही पनप रही थी। इस भावना के कारण ही सारे शहर ने युध्दभूमि का रूप धारण कर लिया था। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में इसे उदाहरण देकर स्पष्ट किया है। उपन्यास के नायक आनंद ने उस निर्दोष मुसलमान तांगेवाले का खून होते देखा, जिसे उन लोगोंने अपने सात आदमियोंकी मौत के बदले में मारा था। इसी प्रतिशोध के कारण ही नोआखाली का बदला बिहार में और बिहार का जवाब रावलपिंडी में देते हैं। लेखकने आनंद के विचारोंद्वारा इसका कड़ा विरोध किया है। - "डिफेंस" या वीरतापूर्ण आत्मसंरक्षण वन्दनीय सही। परन्तु सात हिन्दुओं को जीवित जला देनेवाले मुसलमानों के बदले एक अनजान कोचवान को जीवित जला देना न तो वीरता है और न न्याय। नोआखाली के अत्याचारों का बदला बिहार के मुसलमानोंसे नहीं लिया जा सकता। अगर किसीमें सामर्थ्य हो तो रावलपिंडी और नोआखाली में जाकर "डिफेंस" करे।"[१२]

** द्वितीय खण्ड :

लेखक रामानंद सागरजी ने द्वितीय खण्डमें पंजाब में विभाजन के समय हुए अग्निकाण्ड को चित्रित किया है। उसे पढ़कर ही शरीरपर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। १४ और १५ अगस्त की दरम्यानी रात को, भारत तथा पाकिस्तान को दो टुकडों में बाँट दिया गया, राजधानियों में आजादी का उत्सव मनाया जा रहा था, उसी समय पंजाब में भयंकर अग्निकाण्ड मचा था, उस अग्निकाण्ड में इन्सान की इन्सानियत ही जलकर भस्म हो रही थी। प्रस्तुत उपन्यास में लेखकने इसका सजीव वर्णन किया है। - "रात के बारह बजे "कांस्टिच्युएण्ट असेम्बली" में रेडियोद्वारा ब्राड्कास्ट की गयी "इन्कलाब जिन्दाबाद," "जयहिन्द" और "पाकिस्तान जिन्दाबाद" की आवाजें वायु - तरंगों के कन्धों पर सवार पंजाब के आकाश में से गुजरी तो लाहौर और उसके सौंदर्य को भस्म कर देनेवाली ज्वालाओंने आकाशमें आ-आकर उनपर उँगलियाँ उठायीं, धू - धू करके जलते हुए अलिशान मकानोंने कड़कड़ाकर गिरते - गिरते एक व्यंग्यपूर्ण कहकहा लगाया, और कई व्यथित चित्कार पुकार-पुकारकर कई सवाल पुछते हुए उन मस्ताने नारों के पीछे - पीछे वायुमण्डलमें ठोकरें खाने लगे। -

इसवक्त इन्सान इन्सानसे पनाह ढूँढने के लिये पंजाब के विशाल मैदानों में इधर से उधर दोड़ रहे थे। उनके पाँव छलनी हो गये थे। उनका सामान अग्निदेव या लुटेरों की भेंट चढ़ गया था, दोड़भाग में कपड़े फट गये थे, उनकी ज्यादातर औरतों ने आत्महत्या कर ली थी, और जो थी उनको भी अपने पुरुषों पर विश्वास नहीं रह गया था, उन्हें अपने भाइयों तथा पतियों की आँखों में वही बर्बरता और वहशत दिखाई देने लगी थी, जो उन्होंने आततायियों की आँखो में देखी थी। भूख और प्यास से चिल्ला - चिल्ला कर बच्चों के कण्ठ सूख गये थे। आततायी उनकी चीखों को, बाहर निकलने से पहले ही दबा देते थे, उनमें से कई बच्चों के सिर पत्थर पर पटके जिसतरह धोबी कपड़े धोता है, और कई बच्चों की एक - एक टाँग पकड़कर दो भागों मेंच चीर दिया, जैसे किसी रेशमी कपड़े को हँसते - हँसते फाँड रहे हों। लेखक को यहाँ यह स्पष्ट करना है कि यह अग्नि केवल इन्सानों को ही भस्म नहीं कर रही थी तो, हजारों वर्ष पुराने इन्सान को उसकी संस्कृति और सभ्यता के साथ एक ही दिन में जलाकर भस्म कर रही थी।

उन चार दिनों में इस भड़की हुई आग और धुएँ से सारा आकाश भर गया था, जिसके कारण सूरज ही दिखायी नहीं दिया। कोई ऊपर देखने की कोशिश करता तो आँखों में बूरा पड़ने लगता था। इतना ही नहीं लोग गर्मियों में भी रात को छत पर नहीं सो सकते थे, क्योंकि सबेरा होते ही हवा से उड़ती हुई राख से बिस्तर भर जाता था।

आनंद के मुहल्ले को भी १५ अगस्त को जला दिया गया। बल्कि आनंद के मकान पर शमसदीन ने स्वयं अपने हाथों से पेट्रोल छिड़ककर आग लगायी थी ; जब कि आनंद ने शमसदीन के मकान को बचाने के लिए स्वयं अपनी आत्माहुति देने की कोशिश की थी। इन चार दिनों में शहर में हिन्दुओं का एक भी मकान आग से न बचा था। लेखक कहते हैं कि - उस समय शक्ल सूरत से हर जगह एक - सी थी, गिरते हुए मकानों के जलते हुए मलबे ने धरती पर हर रास्ता रोक रखा था और धरती से ऊपर तो केवल आग ही आग थी, हर दिशा में हर जगह।[१३]

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में यह स्पष्ट किया है कि विभाजन के समय हुए इस अग्निकाण्ड में न केवल जीवित मानव जल रहे थे, बल्कि उनके साथ मृत मानवता भी जल रही थी। लेखक ने इसको सेठ किशोरलरल शमसदीन आदि का उदाहरण देकर स्पष्ट किया है। - जिस समय सेठ किशोरलाल मकान को आग लगायी गयी तब किशोरलाल को अपने जेवरों और नोटों को छिपाने की फिक्र लगी थी; उसे अपनी पत्नी और बेटी की, सहायता के लिए पुकारी हुई चीख भी नहीं सुनायी दी थी। वह आनंद को उनके बारे में पूछने पर बताता है कि, - "उस समय मुझे इतनी फुर्सत ही कहाँ थी, कि मैं उनको ढूँढता फिरता। हजार जल्दी करने पर भी नोटों की कुछ गड्डियाँ वहीं रह गयी; और मैं जो कुछ हो सका, उसी को संभालकर पिछले दरवाजे से निकल गया। भगवान जाने उषा और उसकी माँ का क्या बना..... "[१४] इतना ही नहीं वे आगे यह भी कहते हैं - "तुम्ही सोचो, यह सारा प्रपंच आखिर रुपये ही से तो है। अब तुम्हीं बताओं, मैंने कौन - सा पाप किया है।"[१५]

लेखक ने उस शमसदीन का भी उदाहरण दिया है जिसने अपनी लडिरी में स्वयं अपने हाथों से आनंद के मकान को आग लगायी, जब कि उसी आनंद ने उसके मकान

को बचाने के लिये अपने प्राणों की आहुति देने की कोशिश की थी। लेखक ने उन लोगों को भी प्रस्तुत किया है जिन्होंने सेठ बनवारीलाल के मकान के पिछले दरवाज को कुंडी लगायी थी, ताकि मुसलमान उस रास्ते से उनकी ओर न आ सकें। बनवारीलाल के बार - बार पुकारने पर भी किसी ने कुंडी नहीं खोली थी।

प्रस्तुत खण्ड में लेखक ने न केवल मकान तथा लोगों को ही भस्म होते देखा है, बल्कि नायक आनंद के द्वारा लेखक ने दो सच्चे प्रेमियों को भी विरह की अग्नि में जलकर भस्म होते दिखाया है। लेखक ने आनंद की विरह व्यथा द्वारा सच्चे प्रेम को प्रस्तुत किया है, जो विभाजन के समय जलकर भस्म हो गया था। - आनंद उषा से बेहद प्यार करता था। - मगर उसकी गरीबी दोनों के बीच एक दीवार बनकर खड़ी थी जिसे राधना उषा के पिता सेठ किशोरलाल को मंजूर न था। लेखक ने इन दो प्रेमियों की विवशता को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है। -

आनंद के मुहल्ले को जब जला दिया जाता है, तब आनंद और उषा बिछुड जाते हैं, बहुत ढूँढने पर भी उषा का पता नहीं लगता वह उसके विरह में बहुत दु:खी था, पर मन में एक उम्मीद थी कि, कभी तो मिलन होगा या कम - से - कम जीवनभर प्रतीक्षा ही करनी पड़ती, पर उषा के पिता सेठ किशोरलाल के वक्तव्य से पता चलता हैं कि उषा का कोई पता नहीं, तो उसका मन बड़ा विव्हल हो उठता है, उसे वह अन्धकार-मयी रात उसके जीवन में कहीं अधिक दीर्घायु लगती है, जिस रात्रि में वह ड्योढ़ी में बैठकर उषा की प्रतीक्षा करता था। आनंद सोचता है कि उस रात्रि में आशामयी प्रतीक्षा की उष्णता थी, परन्तु आज इस अग्निकाण्ड ने उस उष्णता को भी ठण्डा कर दिया था।

लेखक ने आनंद की मानसिक व्यथा द्वारा उन दोनों के असीम प्रेम को चित्रित करने का प्रयास किया है। बूढ़े मौलाना द्वारा फिर उन दोनों का मिलन होता है, पर उसवक्त भी सेठ किशोरलाल उन दोनों के बीच दैत्य बनकर खड़ा होता है। और अन्त में गलतफहमी तथा मानसिक घुटन के कारण ही उमा अपनी जिंदगी खत्म कर लेती है, और जिंदगीभर आनंद को दोषी ठहराकर आत्मपीड़न से घुट - घुटकर जीने के लिये छोड़ जाती है।

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में बूढ़े मौलाना द्वारा एक ऐसे धर्म को प्रस्तुत किया है। जो आडम्बररहित, झूठे अलंकारों से रहित, कृत्रिमता से रहित प्राकृतिक धर्म को उजागर करता है। -

बूढा मौलना एक ऐसा पात्र है, जो एक ओर मुस्लिमों से मिला दिखायी देता है पर असल में वह उनका विरोधी है उन्हें सारे देश में फैला यह आतंक निर्दोष लोगों की निघृण हत्या बिलकुल पसन्द नहीं, उन्हें मालूम है कि अकेनले उनके विरोध में जाकर कुछ किया नहीं जा सकता, इसीलिए वह छुप - छुप कर हिन्दुओं की मदद करते हैं। मौलाना एक मुस्लिम युवक से झूठ बोलकर एक भाला हासिल करते हैं और आनंद के सामने ही उसे एक जलते हुए मकान में तोड़कर फेंकते हैं। उनके इस कृत्य पर आश्चर्य से आनंद कहता है कि, - "उस एक भाले को जलाकर आपने आपने पापक की ताकतों को कमजोर कर दिया है?" मौलाना कहते हैं, - "याद रखो कि नेकी को कभी कमजोर या तुच्छ नहीं समझना चाहिए। नेकी का मामूली से मामूली काम भी निष्फल नहीं होता; बल्कि कुरान शरीफ में तो यहाँतक कहा है कि जिसने एक जिन्दगी को बचाया, वह ऐसा ही है जैसे उसने सारी दुनिया की जिंदगी को बचाया।[16] अपने मजहब या धर्म के बारे में वे कहते हैं। - "केवल नमाज का ही नाम मजहब नहीं है, और न इनसान को केवल खुदा की तारीफ करते रहने के लिये बनाया गया है। उस काम के लिये फरिश्ते बहुत थे। इनसान को तो इन्सानियत की सेवा करने और खुदा की इस कायनात को खूबसूरती, खुशी और प्यार से भरने के लिए भेजा गया है। और यही उसका असली मजहब या धर्म है।" [17]

लेखक ने आनंद के विचारमंथन द्वारा विभाजन के समय की धर्म की आडम्बरता को स्पष्ट किया है। - "माल एक ही था, परन्तु हर धर्म के दुकानदार ने अपना - अपना दाम बढ़ाने के लिये उस पर भाँति - भाँति के तकल्लुफ और धर्म - कर्मादि के आडम्बर की भिन्न - भिन्न मुहरें लगा रखी हैं।"१८ इसतरह लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में स्थान - स्थान पर आनंद और बूढ़े मौलानाद्वारा विभाजन के समय सारे देश में फैली धर्म के आडम्बर पर कड़ा व्यंग्य किया है।

** तृतीय खण्ड :-

लेखक ने उपन्यास के तृतीय खण्ड में शरणार्थियों की समस्या तथा आनंद की, जिंदगी के प्रति घोर निराशा आदि को चित्रित किया है। लेखक ने इस खण्ड में उन शरणार्थियों का चित्रण किया जिनमें से हर एक अकेला था, पर ऐसा प्रतीत होता था कि सबका दु:ख एक ही हैं, इसके बारेमें लेखक कहते हैं - "जैसे माला के मनकों की भाँति वह सब मुसीबत के एक ही धागे में पिरो दिये गये थे। एक ही रिश्ते ने उन सबको इकट्ठा कर दिया था, और अब हर कोई एक दूसरे का कुछ न कुछ अवश्य था, और कुछ नहीं तो हर कोई एक दूसरे के दु:ख में भाग तो लेता था; जैसे उनके पुरखा उनके लिये जायदाद के तौरपर एक विराट दु:ख छोड़ गये हों और यह सब उनकी औलाद पुरखों की उस जायदाद में एक - दूसरे की शरीकदार बनने आज यहाँ जमा हुई हो।"१९

विभिन्न शहरों, विभिन्न जातियों और विभिन्न घरानों के इन व्यक्तियों की कहानियों में साम्य था, वे एक दूसरे की कहानी सुनते थे अपनी सुनाते थे, पर अंत में यह निर्णय करना कठिन होता, कि यह घटना किस पर बीती थी, सबको वह अपनी ही कहानी लगती। लेखक कहते हैं, - "जैसे सामूहिक दु:ख की भट्टी में से पिघलकर निकलने के बाद मानवीय भावनाओं के उस उबलते हुए लावे को किसी एक ही साँचे में ढालकर सब एकही प्रकार के बुत बना दिये गये थे।" २०

उपन्यास का नायक आनंद भी इस कैम्प में पहुँचकर सोचता है कि, उसने क्या खोया और क्या पाया है ? उसके पास दूसरों की भाँति न लाखों रुपये न अलिशान बिल्डिंगें थीं, फिर भी उसका नुकसान उन सबसे कहीं अधिक था । विभाजन ने उसकी सारी जिंदगी ही लूट ली थी, उसके जीने का मकसद ही उषा थी, वही उसे छोड़कर, हमेशा के लिये चली गयी थी, इसलिये उसके जीवन में सिर्फ अंधियारा, एक श्मशान की - सी वीरानी छायी हुई थी। उषा की मृत्यु "आनंद को जीवन के उजियारे में भी अंधकार में धकेल गयी थी। उसका जीवन नीरस तथा शुष्क बन गया था, केवल अनुभूतियों के सहारे ही वह जी रहा था, भविष्य के बारे में उन दोनों ने कल्पना के कैसे - कैसे रंग भरे थे, विरोध के सख्तसे सख्त तूफानों में भी उन्होंने आशा का आँचल थाम रखा था, पर विभाजन के थपेट ने एक ही झटके से वह आँचल उनके हाथों से छुड़ा लिया था। वह उषा की मृत्यु के लिये स्वयं को ही दोषी ठहराता है, और इसी आत्मग्लानि में प्रतिक्षण जीता है। वह एक दयनीय स्थिति में "कुछ" करने की लालसा-लिये पश्चिमी पंजाब में इधर से उधर भटकता फिर रहा है लेकिन उसे कोई कर्तव्यक्षेत्र नहीं मिल रहा था।

इसतरह इस शरणार्थि कैम्प में केवल आनंद ही एक ऐसा इन्सान था ज्यों हर एक की कहानी सुनता था, उसे दूर करने का भरसक प्रयत्न करता। वह सभी के दु:ख में अपने को शामिल करता था। लेखक कहता है कि, "मानो, उसने अपने और अपने दिल के सैकड़ों टुकड़े कर दिये थे जिनमें से हर एक टुकड़ा किसी - न - किसी के दु:ख का साझीदार था।"[२१] लेखक ने शरणार्थी कैम्प में स्थित निर्मला, किशनसिंह, अनंती, उजागरसिंह तथा मौलाना द्वारा कथित घटनाओं के आधार पर विभाजन के समय हुई इन्सान की सामाजिक, आर्थिक, मानसिक हानि को यथार्थ रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है।

नारी की जितनी दुर्गति विभाजन के समय हुई उतनी भारत के इतिहास में और कभी नहीं हुई होगी। उसका अपमान, उसकी बेइज्जति, शारीरिक

कष्ट, मानसिक उद्वेलना आदि का वर्णन ह किसी लेखक के लिये भी वर्णनातीत है। उसका न केवल अपहरण किया गया था, न उस पर केवल बलात्कार किया गया था, न उसके कोमल सौंदर्यजनक अंगहीं काटे गए थे बल्कि उसे एक वस्तु की भाँति पूर्ण नग्न करके उसका जुलूस निकाला गया था। इन्हीं घटनाओं को लेखक ने निर्मला, अनंती तथा मौलानाद्वारा विप्र वर्णित उन दो डॉक्टर की लड़कियों के चरित्र द्वारा स्पष्ट किया है।

निर्मला एक शरणार्थी युवती थी, दो मजहबवालों का शिकार बन गयी थी। लेखक कहते हैं, इन मजहबवालों ने दरिया के एक किनारे एकने तो दूसरे किनारे पर दूसरे ने अपना हक जमा लिया था परंतुब जीवन की भाँति बहते हुए उस दरिया की लहरों के दो टुकड़े उनसे न हो सके थे। उसकी लहरें दोनों कटे हुए किनारों के बीच सिलाई के टाँकों की भाँति इधर से उधर आ - जा रही थीं।"२२ दोनों किनारों से उसमें हजारों लाशें फेंकी गयी थीं, परन्तु उसने धर्म और मजहब के भेद - भाव के बिना उनको एक - दूसरी की गोदी में डाल दिया था। कई जीवित इन्सान उसने एक किनारे से दूसरे किनारे को सौंप दिये थे, इनमें से ही एक निर्मला थी।

निर्मला को मुसलमानों ने अपहृत किया था और घरवालों ने तिरस्कृत ॥ विभाजन के वक्त ऐसी अपहृत नारियों को ना ही समाज सहारा देता था, ना ही उसके अपने घरवाले।

निर्मला को भी ऐसे ही एक, मुसलमानी आतंकवादी गिरोह ने अपहृत किया था, जब वह और उसका पति नदी किनारे सूखी टहनियाँ चुन रहे थे। उसका पति उसको बचाने के बजाय स्वयं ही पहले भाग गया था। उसके गाँव की और भी कई स्त्रियों को मुसलमानों ने अपहृत किया था, उनके घरों में बूढ़ों और नौजवानों की लाशें गिरी थीं पर उनमें निर्मला के घर का कोई न था। इतना होने पर भी उसका पति-प्रेम कम नहीं हुआ था, उनके बचने की उसे बहुत खुशी हुई थी। निर्मला को अपने बच्चे से बेहद प्यार था और इसी कारण एक दिन वह मुसलमानों को धोखा देकर दो मंजिलें मकान की खिड़की से कूदकर नदी की ओर भाग

गयी थी; और पूरी शक्ति से तैर गई थी। उसकी आँखों के सामने केवल उसका बच्चा दीख रहा था। उसे कूदने से हुई चोटों का भी ख्याल न था। निर्मला उसवक्त कई दिनों की भूखी थी परके केवल बच्चे का ध्यान ही उसे उस पार ले गया।

निर्मला ने बीच रास्ते भविष्य के कई सपने देखे, कल्पनाएँ कीं कि, कल सारे लोग, रिश्तेदार बधाई देने आयेंगे, माँ को कितनी खुशी होगी . . . . . इतना सारा होकर जब वह घर पहुँची तो पहले उसके पति ने उसे पहचाना ही नहीं, बाद में पूछा, "अब यहाँ क्या करने आयी हो ?" २३ जब उसने ससुर के पैर छुए तो उसने उसके अपवित्र स्पर्श से बचने के लिए "राम - राम" की शरण ली। निर्मला को उस वक्त ऐसा महसूस होने लगा जैसे, किसी ने कलंक की मुहरें तपा कर मेरे शरीर के एक - एक अंग पर दाग दी हो।" २४ ससुर ने उसे पागल कहा, और सती सिता का ब्यौरा दिया। - "माता सीता तो सती थीं।" २५ यह कहकर उसके ससुरने यह भी कहा कि इज्जत - आबरू के बिना यहाँ कोई जीवित नहीं रह सकता। इतना होने पर ही उसके पति ने कुछ नहीं कहा। निर्मला सोचती सोचती है, - "जो व्यक्ति अपनी आँखों के सामने अपनी पत्नी को दूसरों के घेरे में फँसता देखकर स्वयं कायरों की भाँति भाग सकता था।, वह अब उसे अपने कुल की लाज उसके हाथों बर्बाद होते देखकर और कर भी क्या सकता था।"२६

उसके ससुर ने कहा कि, "दुखी होने की कोई बात नहीं॥ हमने उनसे पूरा बदला ले लिया है, जितनी औरतें हमारे गाँव की वे उठा ले गये थे, उनसे कहीं अधिक संख्या में हम उनकी औरतें गाँव में ले आये हैं। उन्होंने गर्व से यह भी कहा कि, अपने यहाँ भी दो हैं॥" २७ अन्त में उसके ससुर ने उसको शाबाशी भी दी कि, - तुमने यह बड़ी बुद्धिमत्ता दिखायी कि रात के अँधेरे में यहाँ आई हो, नहीं तो इतने बड़े घराने की लाज मिट्टी में मिल जाती।

इसतरह निर्मला के सतीत्व को पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों ने मिलकर लूटा था, निर्मला को हर जगह औरत के लहू के धब्बे दिखाई दे रहे थे। इससे लेखक को यह स्पष्ट करना है कि, अन्तमें दोनों मजहबवालों ने अपना शराफत का नकली चेहरा उतारकर अपने असली वास्तविक रूप के दर्शन दिए ही। उसवक्त विलासिता और ऐय्याशी के लिये वे दोनों एक - दूसरे से मिल गये थे। स्वयं औरत के लिये उनमें कोई जगह नहीं थी। निर्मला सोचती है, - धरती की तरह हमारे शरीरों का भी बँटवारा तो उन्होंने कर लिया था, परंतु एक औरत, एक माँ को शायद कोई भी अपने हिस्से में लेना न चाहता था।" २८

और इन सबसे निराश होकर निर्मला ने आत्महत्या करना चाहा, पर वहाँ भी उसे सफलता नहीं मिली वह कहती है कि, - रावी नदी की लहरें भी जिसमें वह कूदी थी वह भी उसे छोड़कर आगे चली गयी, - वह भी मुझे छोड़ गई - शायद इसलिये कि मैं उसकी भाँति पवित्र नहीं थी, मेरा सतीत्व भ्रष्ट हो चुका था। इसतरह लेखक को निर्मला की कहानी द्वारा स्पष्ट करना है कि विभाजन के समय मनुष्य पशु से भी नीचे कैसे गिरा हुआ था।

शरणार्थी

शरणार्थी कैम्प की दूसरी औरत थी अनंती विभाजन के चपेट ने जिसे पागल बना दिया था। रावलपिंडी जिले के उनके गाँव पर हजार पठानों ने मिलकर हमला किया, वध करने से पहले वहाँ के सब मरदों को वृक्षों और स्तंभों के साथ बाँधकर उनके सामने गाँव की सब औरतों को नग्न करके उनका जुलूस निकाला गया। रस्सों में जकड़े पुरुषों ने मुँह फेर लिये, आँखें बन्द कीं, और स्त्रियाँ विवश होकर उन्हें बार - बार पुकार रही थीं, ... "तुम इस समय कहाँ हो ?" २९ और किसी प्रकार उनके हाथोंसे बचकर अनंती भागकर एक काफिले के साथ शामिल हो गई थी। परंतु इस बात का अफसोस उसे हो रहा है कि वह वहाँ से भागी क्यों ? वह पागलपन में बड़बड़ाती है, - "मेरा बेटा उस वृक्ष के साथ बँधाहुआ है। वह मर गया है। - अब तो उसे खोल दो . . . . . न खोलो पर जरा

रस्सा ही ढीला कर दो देखो उसके शरीरपर चीर पड़ जायेंगें . . . . , .
उसे मार डालो - उसे मार डालो, पर रस्से खोल दो . . . .
"अरे क्या इसीलिये तुझे जवान किया था। तेरी बहू को कौन उत्तर देगा बेटा। वह जब विवाहवाले दिन आकर पूछेगी की मेरा दुल्हा कहाँ है, तो मैं किसे दुल्हा बनाऊँगी। अगर तुझे जवानी में मौत ही आनी थी तो तू ज्वान ही क्यों हुआ ? तू बालक ही बना रहता और मैं तुझे लोरियाँ देती रहती -

राजा बेटा आया खेल के
मैं पूरी बनाऊँ बेल के
राजा बेटा आया घोड़ीपर
मैं ले लूँ बलैयाँ डयोढ़ीपर।" 30

इसतरह लेखक ने अनंती की कहानी द्वारा यह स्पष्ट किया हैकि कि किसप्रकार विभाजन के वक्त आतंकवादियों ने माँ की ममता को कुचल डाला। और इसी स्थिति में पुरुष की वहशत से वह हर मर्द को देखते ही अपनी धोती उठाकर नंगी हो जाती और ऊँची आवाज में पुकारने लगती -

"लो देख लो - लो देख लो।" 31

मौलाना द्वारा कथित जालंधर के एक मुसलमान डॉक्टर की लड़की का वर्णन था, जिसने बीस घण्टे अपने पिता तथा छोटी बहन के साथ एक हिन्दू - सिक्खों के बिफरे हुए दल से टक्कर ली और अन्त में हार गयी। डॉक्टर का उन्होंने पहले वध किया तथा इन लड़कियों को नग्न करके जुलूस के आगे चलने को कहा, इन्कार करने पर एक युवक ने बड़ी की योनि में तलवार ठूँस दी तो छोटी पर कइयों ने वहीं बीच रास्ते बलात्कार किया उनके साथ उनका एक छोटा भाई भी था उसने यह देखकर जब चिल्लाना शुरू किया, तो उसे किसी ने लोहे की एक कुण्ठित सीख उसके पेट में खुबों दी कि वह उसी पर टँग गया। . . . .

मौलाना द्वारा वर्णित पूर्वी पंजाब, लाहौर तथा दिल्ली की परिस्थिती से यह स्पष्ट होता है कि कैसे विभाजन के समय पैशाचिक लीलाओं का उधम मचा था। लाहौर का वर्णन करते मौलाना कहते हैं जिसे "शहरों की दुल्हन" कहा जाता था, वह अब उस दुलहीन की तरह दिखाई देता है जिसके गहने और कपड़े डाकुओं ने नोंच लिये हों और जिसके सौंदर्य और शरीर को जगह - जगह से जख्मी कर दिया हो।[32] मौलाना कहते हैं - वहाँ हर एक जख्मी है - किसी की बाँह कटी हुई है तो किसी की आँख नहीं, किसी की टाँग कुचली हुई है तो किसी की इस्मत या सतीत्व लहूलुहान है; और बाकी जो मर नहीं गये उनकी रूहें, उनकी आत्माएँ जख्मी हैं और अन्त:करण कुचले हुए ॥ हर एक के शरीरपर या दिल पर किसी - न - किसी चोट, किसी - न - किसी जख्म या किसी - न - किसी मौत का अमिट दाग है।... वह जख्म जिसका इलाज करनेवाला कोई नहीं रहा, जिसमें कीड़े पड़ गये हैं। - घायल कराहते हुए इनसानों के रूप में रेंगते कीड़े।[33]....

पूर्वी पंजाब की स्थिति भी कुछ इसीप्रकार थी, वहाँ राशन की दफ्तरों से मुसलमानों की नाम की सूची बनाकर एक - एक को ढूँढकर कत्ल किया गया था। पूर्वी पंजाब के बड़े - बड़े शहरों की सड़कों पर स्थायी रूप से चिता जलाकर उसमें हर राह चलते मुसलमान की आहूति दे दी थी। लेखक को यहाँ यह स्पष्ट करना है कि, इन्सानियत को फाड़ डालने में मुसलमान ही क्यों पहल कर गये, और अब हिन्दू इसी पीछे रहने की कमी को पूरा करने पर तुल गये थे। यदि पहल नहीं कर सके तो कम - से - कम संख्या में अधिक वध करने का श्रेय तो मिले॥

मौलाना ने दिल्ली की भी घटनाएँ सुनायीं, जिसमें उन मुसलमान शरणार्थियों ने किसप्रकार लाल किले में शरण ली, किसप्रकार भीषण वर्षा में बाड़े मे बँधे पशुओं की भाँति घुटनों - घुटनों पानी में वे खड़े भीगते रहे, निमोनिया और बुखारसे कई बालक मर गये; उनकी लाशें भी लावारिस सामानों के साथ इधर से उधर पानी में तैरने लगीं, जिन्हे अपना कहनेवाला

कहनेवाला भी न था। और किस प्रकार पानी उतरते ही उस दलदली ग्राउंडमें साँप निकल आए और बड़े मज़े से इनसानी लहू पीते रहे। करोल बाग देहली के एक हिन्दू पुरनियें ने अपने यहाँ शरणागत मुसलमान कुटुम्ब के ग्यारह व्यक्तियों की जान बचाने के लिये किसप्रकार अपने ही मजहबवालों से अपनी तथा अपने बच्चे की आहुति दे दी थी।

शरणार्थियों को ले जानेवाली रेलगाड़ियों का वर्णन करते हुए मौलाना ने उस रिफ्यूजी ट्रेन का वर्णन किया आठ हजार हिन्दुओं को ले जानेवाली उस ट्रेन को लाहौर के कुछ आगे जाने के बाद पूरा सफाया किया गया था, एक भी आदमी नहीं बचा था।जब वह गाड़ी अमृतसर, पहुँची तो उस गाड़ी में लहू और लाशों के सिवा कुछ न था। स्त्रियों के मृत शरीर नंगे करके डिब्बों के बाहर लटका दिये गए थे, उनकी छातियों में पर पाकिस्तान लिखा हुआ था और उनकी योनियों में लकड़ियाँ ठूँस दी गई थीं, जिसे देखकर पंडित नेहरू भी बच्चों की भाँति रोने लगे थे।

इसी के प्रत्युत्तर में पूर्वी पंजाब में हिन्दू और सिखों ने मिलकर कई मुस्लिम गाड़ियों के साथ जो कुछ किया वह इससे भयानक था। एक गाड़ी में तेरह हजार इंसानों में से केवल पन्द्रह बचे थे और वह भी लाशों के नीचे दब जाने के कारण। "उन पन्द्रह ने बेहद भूख और प्यास के कारण फर्शपर जमे हुए अपने भाइयों, पत्नियों, बच्चों के लहू को चाटा था, अपने शरीर में दाँत काटकर लहू से सूखे गले को गीला करने की कोशिश की थी। कई दिन तक प्यासे रहने के कारण आखिर हो उन्होंने एक - दूसरे के मुँह में पेशाब किया था ताकि गले तो तर हो सकें।" ३४

लेखक ने उपन्यास के और एक पात्र उजागरसिंह के चरित्रद्वारा विभाजन की भयानक विभीषिका तथा लोगों में फैली वहशत का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। अनेक जगहोंपर हुए मुस्लिमों के अत्याचार स्त्रियों तथा बच्चों पर किये गये जुल्म आदि को सुन - सुनकर लोगों में उनके बारे में इतनी वहशत फैली थी कि कुछ स्थानों में लोग आततायीयों के पहुँचने से पहले ही स्वयं अपने हाथों से अपने बीबी - बच्चों को मार डालते ताकि

आततायीयों के हाथों उनकी निर्मम हत्या न हो। रावलपिण्डी जिले के कुछ स्थानों में ऐसी बहुत घटनाएँ हुईं। कुछ गाँवों में आततायीयों के पहुँचने से पहले स्त्रियाँ और बच्चों को एक ही मकान में एकत्रित करके गुरग्रंथ साहिब का पाठ करने को कहा गया था, और फिर बाहर से द्वार बंन्द करके आग लगा दी गयी थी। कई स्थानों पर माताओं ने अपनी जवान बेटियों को अपने शरीर के साथ कुँओं में छलाँग लगा दी थी।

और इसीतरह उजागरसिंह के गाँववालों की जब बारी आयी तब उन्होंने भी स्वयं अपने हाथों से अपने बीबी और बच्चों का कत्ल किया ताकि वे आततायीयों के हाथ न आये। और व अपनी रक्तरंजित किरपानें लेकर शत्रु से लड़ने तैयार हो गये। उसवक्त उनके मनमें केवल घृणा और बदले की आग भड़की थी। उजागरसिंह ने भी स्वयं अपने हाथों उपनी बीबी तथा दो मासूम बच्चों का कत्ल किया था। उसके मन में भी एकही अरमान था कि आततायीयों को अधिक से अधिक संख्या को खत्म करके स्वयं ह जल्दीसे जल्दी शहीद हो जाएँ। और आक्रमण शुरू हुआ आततायीयों की तरफ से तोप तथा गोली बाड़नी शुरू हुई थी, इन्होंने भी मरने का डर छोड़कर खुले मैदान में आखिरी धावा बोलने की ठान ली। "जो बोले सो निहाल - सतसिरी अकाल . . . ."[35] का एक जोर का नारा हवा में गूँजा और यह देहाती वीर शत्रु की ओर बढ़े। परन्तु ठीक उसी समय पाँच छ: फौजी टैन्क उनके और आततायीयों के बीच आ गये। इन लोगों को बचाने के लिये सरकार ने सेना भेजी थी। इसतरह नियति ने उनके साथ बड़ाही मज़ाक किया था।

आगे उनकी हालत का वर्णन लेखक ने बड़ाही मार्मिक किया है। - बदला लेने के क्या - क्या अरमान उनके हाथों में लहू के साथही जम गये थे, यहाँ तक कि एक दो की मुट्ठी जबर्दस्ती खोलने की कोशिश में उनके लकवे से मारे हुए हाथों की अँगुलियाँ ही टूट गईं। उजागरसिंह की भी एक अँगुली तोड़नी पड़ी। परन्तु बच्चे का वह खिलौना अभी उसके हाथ में था,

जिसे उसके बच्चे ने मुसलमानों को मारने के लिये बनाया था। और इन सब बातों की उजागरसिंह पर बड़ी गहरी चोट पहुँची और वह पागल हो गया। वह उस खिलौने को उसी बालक की भाँति बच्चा बनाये फिर रहा था और उसके मन में अब केवल एकही अनुभूति शेष थी जो उसको व्यंग्य के काँटे की भाँति चुभो रही थी, और उसको अपनी आत्मा ऊँची आवाज में खिलखिला उठती थी -

"मैं बच गया - मैं बच गया!" [36]

अन्त में निराश होकर मौलाना ने भविष्य के बारे में कहा कि, "गुनाह की सजा से कोई नहीं बच सकता, जब एक निर्दोष के कत्लपर उसे मारनेवाले की कई पिढ़ियाँ उसकी सजा से बरी नहीं हो सकती तो यहाँ और जहाँ हजारों नहीं लाखों मासूमों का खून बहाया गया है। इसकी सजा कितनी भयानक होगी! ..... मुझे तो सारी की सारी मनुष्य जाति ही खत्म होती महसूस हो रही है। ..... इन कातिल कौमों के घर भविष्य में बच्चों की जगह लाशें ही पैदा हो। मरे हुए लड़के और ऐसी लड़कियाँ ही इस कौम की कोख में जन्म लें जिनका सतीत्व जन्म से पहले ही नष्ट किया जा चुका हो; और फिर सारी की सारी कौम अपने ही आतंक और घृणा के मारे दरियाओं में कूद - कूद कर मर जाए। - यहाँ तक कि एक भी इनसान बाकी न रहे। ..... !" [37] आनंद के मन में अभी भी आशावाद बाकी है, वह मौलाना को भी निराशा से प्रवृत्त करने की कोशिश करता है। - "मैं उस दिन को देख रहा हूँ जब इन बातों का परिणाम लोगों के सामने अपने भीषणतम रूप में प्रकट होगा - जब अनाज और इन्सानियत दोनों का अकाल पड़ जायेगा, जब इनसान न केवल रोटी का भूखा होगा बल्कि एक - दूसरे के साथ का! ..... जब तक आदमियों की इस भीड़ में तुम जैसा एक भी इनसान मुझे दिखाई दे रहा है मैं निराश नहीं हो सकता। और यदि किसी दिन मैं निराश हो गया तो मौलाना याद रखो कि मेरे लिए अब अपने जीवन में कोई दिलचस्पी बाकी नहीं - उस दिन मैं आत्महत्या कर लूँगा।" [38]

आखिरकार प्रकृति भी उनके विरुद्ध हो गयी और जमुना में जोरों की बाढ़ आ गयी किनारे के सारे गाँव के गाँव बह गये। इन शरणार्थियों के कैम्प को भी पानी ने चारों तरफ से घेरा डाला। कैसे हर एक व्यक्ति अपनी जान बचाने की कोशिश में लगा था, इसका सजीव चित्रण इस खण्ड में हुआ है। उसवक्त हरएक को सिर्फ अपनी जान की पिक लगी थी, जिन्हें उस लड़की की मृत्यु का अफसोस तक नहीं जिसे सांप ने काटा था, किश्ती के हाथ लगने से भी सब एक - दूसरे के उपर ही सवार होने लगे, किशनचंद के बार - बार चिल्लानेपर कि - "इसतरह डूब जाओगे, बारी - बारी जाओ।"[३९] किसी ने नहीं सुना, सब को अपनी-अपनी जान बचाने की लगी थी और; आगे जाकर उस किश्ती के साथ उन सबको जलसमाधि मिल गयी।

आनंद अब तक आशा का दामन थामा था, धीरज नहीं खोया था वह भी इस दृश्य को देखकर बिलकुल निराश हो गया, जीने के लिये किया गया हुआ उन लोगों का व्यर्थ का प्रयास और कुछ ही क्षणों में उन्हें मिली हुई मृत्यु की नीरव शांति को देखकर आनंद का मन भी हिल गया; उसे पीछे रहनेपर अफसोस होने लगा। उस समय उजागरसिंह का "मैं बच गया - मैं बच गया!"[४०] कहकर चिल्लाना आनंद को यूँ महसूस हुआ कि मानों उजागरसिंह स्वयं आनंद ही पर व्यंग्य के तीर चला रहा हो। - जैसे उस समय उन चारों का बच जाना बिलकुल वैसा ही बच जाना था जैसे उजागरसिंह का अपने बीवी - बच्चों का वध करने के बाद बच जाना।.....

आनंद तथा उजागरसिंह के सामने न जीने की कोई आशा है, न कोई मकसद फिर भी वे जीये जा रहे हैं, वे जिंदगी से बिलकुल हार गये हैं, मृत्यु को गले लगाना चाहते है पर मृत्यु उनको पीछे छोड़कर आगे भाग रही है। इस तरह खंड का शीर्षक "मैं बच गया" . . . . आनंद तथा अजागरसिंह के मानसिक द्वन्द को स्पष्ट करता है।

** चतुर्थ खण्ड :-

लेखक ने उपन्यास के चतुर्थ खण्ड में पश्चिमी पाकिस्तान से हिन्दुस्तान की ओर आनेवाले साठ मील लम्बे काफिले की यात्रा का सजीव तथा सूक्ष्म वर्णन किया है, जो दिल दहला देता है। उपन्यास का नायक आनंद भी उस काफिले में शामिल था। इस काफिले के साथ घसीटता जा रहा था। इस साठ मील लम्बे काफिले में चार लाख के करीब हिन्दू और सिख शरणार्थी हिन्दुस्तान की ओर जा रहे थे। उस काफिले में कोई किसी की पूछताछ नहीं करता था, सब अपने में ही मगन थे।आनंद ने लाहौर में मृत शरीरों को भी गले मिलते देखा था। जबकि यहाँ इस काफिले में "जीवित इन्सान" एक दूसरे के साथ चलते हुए भी मानों एक - दूसरे से हजारों मील दूर - दूर थे। किसी को किसी दूसरे का खयाल तक न था। लेखक कहता है, "उस काफिले में सूरत शकल से तो कोई आदमी ही नहीं दिखाई देता था।" [41] आनंद, निर्मला और किशनचंद चार दिनों से भूखे इस काफिले के साथ घसीट रहे थे, पर किसी ने भी उन्हें एक रोटी का टुकड़ा तक नहीं दिया था।

लेखक कहता है कि, दिनभर ये लोग इस भीड़ में/दूसरे एक दूसरे के कन्धों से कन्धे टकराते रेंगते रहते और रात पड़नेपर भी उसी तरह एक दूसरे में गड़मड़ होकर लेट जाते। परन्तु कुछ ऐसे निःसंग भाव से, मानों वे वरै जीवित इन्सानों के बीच नहीं बल्कि किसी घने जंगल की झाड़ियों के दरम्यान सो रहे हों। [42] इससे लेखक को यह स्पष्ट करना है कि लोगों में एक - दूसरे के प्रति कितनी दहशत पैदा हो गयी थी; जो अपने मजहबवालों पर भी विश्वास नहीं कर पा रहे थे। इतनाही नहीं इसवक्त इस काफिले के व्यक्ति इतने स्वार्थी तथा कटु हो गये थे कि उन्हें अपने परिवारवालों के प्रति भी प्यार नहीं रहा था, सिर्फ उन्हें अपनी जान की फिक्र लगी थी। इसवक्त कोई स्त्री थककर अगर थोड़ासा - सा विश्राम करने बैठती तो उसे अपने पति, बेटा या भाई के नाम मात्र साथ से भी हमेशा - हमेशा के लिये वंचित होना पड़ता था। कोई किसी की खातिर पलभर भी नहीं रुक सकता था।

आनंद कारफिले के इस दृश्य को देखकर बहुत निराश होता है। "इन्सानों ने इन्सानों का वध किया तो वह इतना हताश न हुआ था। उसमें उसे इनसान और इन्सान के बीच एक पारस्परिक सम्बन्ध तो दिखाई देता था - चाहे वह शृंगार या घृणा का सम्बन्ध था।" ४३ लेकिन इस कारफिले में पहुँचकर वह इन्सान और इन्सान के बीच की निःसंगता तथा वैषम्य भावना को देखकर दुःखी होता है। लेखक कहता है - "यहाँ आकर जैसे मानवता नंगी हो गई थी, धर्म की पोल खुल गयी थी, और इन्सान अपने असली रंग में प्रकट हो गया था उसने आज हजारों लाखों बरसों की परंपराओं के जोर पर बने हुए तमाम नाते तोड़ दिये थे और अब जैसे वह बिलकुल स्वतंत्र हो गया था।" ४४

आनंद और निर्मला के साथ वह बालक भी था, जो शरणार्थी कैम्प में किशन चंद ने अपने बहन का बच्चा कहकर उन्हें ला दिया था। इसवक्त भूख के मारे वह भी तड़प रहा था, वह एकदम मुरझा गया था, चार दिनों से भूखी होने के कारण निर्मला का दूध भी कम हो गया था। भूख के मारे उसमें रोने तक की शक्ति नहीं थी। यदि वह रोता तो भी आवाज् ही नहीं सुनायी देती थी। आनंद इस जीवन बिलकुल उब गया है। उसे बाढ़ में से बचने का बेहद अफसोस है। वह किशनचंद से कहता है, - "वह सब बहुत बुद्धिमान थे। - तब समझदार थे - कितनी शांन्ति से और कितनी जल्दी उन्हें नदी की गोद में आश्रय मिल गया। कितनी शांन्ति - कितना सकून - - - - - " - - - - - - - - - - - - - - " अभी समय है। काश अब भी मुसलमानों की कोई टोली हम पर हमला करके हमें खतम कर दे, तो अब भी हो सकता है - वरना हिन्दुस्तान में क्या रखा है - वहाँ शान्ति कहाँ है - ।" ४५ और अगले सुबह ही कारफिले पर हमला हुआ, जिसमें किशनचंद मारा गया वहाँ भी आनंद की प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई । -

किशनचंद का असली रूप अन्त में प्रकट होता है वह एक मुसलमान है, जिसका नाम रहमान है। पाकिस्तान में उनकी बहन का हिन्दुओं ने अपहरण किया, इसीलिये वह यहाँ आकर हिन्दू लड़कियों को अपहृत करना चाहता है, उसके साथ उसका एक भाई भी था इस्माइल - जब पहली लड़की को उन्होंने

अपहृत किया तो उसका चीखना चिल्लाना चिल्लाना सुनकर उसे अपनी बहन की याद ह आ गयी, वह उस समय उस हिन्दू स्त्री के बच्चे को लेकर हिन्दू काफ्ले को ढूँढता आनंद के पास पहुँचा था। और अन्त में भी काफिले की हिन्दू लड़कियों को मुसलमानों से बचाने की कोशिश में अपने ही भाई की गोली सेक मारा गया। जब काफिले के लोगों को इसका मुसलमान होने का पता चलता है तो सब इस पर टूट पड़ते हैं। इसतरह लेखक ने लोगों के मन में स्थित अमानवीयता को उजागर किया है।

और आगे चलकर उषा नामक एक स्त्री जो इस विभाजन के चपेट में ही पागल हो गयी थी, आकर इस बच्चे को निर्मला से छीन लेती है और मेरा-बेटा, मेरा - बेटा कहकर भागने लगती है आनंद गुस्से में उसे थप्पड़ भी मारता है। तब वह बताती है कि मेरा नाम उषा है, और रहमान की तरफ इशारा करके कहती है कि यह मुझे जबर्दस्ती उठाकर ले गये थे - - [46] वह उस बच्चे को ले जाती है पर उसे दूध तक नहीं पिला सकती क्योंकि उसके स्तन ही काँटे गये थे; जब इसका एहसास होता है तो फिर वह उस बच्चे को निर्मला के पास देती है और, यह मेरा बच्चा नहीं - - - - मेरा बच्चा नहीं कहकर चिल्लाती भाग जाती है। इसतरह लेखक ने उषा के चित्रण द्वारा विभाजन के समय के कितनी ही स्त्रियों की व्यथा को चित्रित किया है, जो इतनी सारी यातनाएँ सहकर केवल अपने बच्चे की खातिर जी रही थीं।

वह बालक भूख के कारण तड़प तड़प कर मर जाता है। परंतु आनंद उसको अपने सीने - से लगाये ही चल रहा था, आनंद को ऐसा महसूस हो रहा था, - "जैसे वह किसी विराट शून्य में कदम रखता हुआ किसी अनजानी दिशा में अकारण ही बढ़ता चलता जा रहा हो - और उस अनजाने शून्य पथ पर केवल वह बालक ही उसके साथ था। बाकी सबकुछ उसे अपने से दूर दिखाई दे रहा था।[47] निर्मला कई बार - बार समझाने पर भी वह उस बच्चे को अपने से दूर नहीं करता। और अन्त में आनंद को सच्चाई का एहसास होता है तो उसकी आँखों मे आँसू बहने लगते हैं, उस बच्चे को रखने के लिये वह छाँव वाली जगह ढूंढता फिरता है। अन्त में जब जगह मिलती भी है तो वहाँ गिदधों और कुत्तों को देखकर वापस उसे अपने साथ ले चलता है -

पर आगे चलकर रोटियों के खातिर हुई छीना - झपटी में आनंद के हाथ से निकलकर वह बच्चा लोगों के पाँव तले कुचल दिया जाता है। इसवक्त आनंद दु:ख से कहता है, - "जिस कोमल से शरीर को मैं गिद्धों और कुत्तों से बचा लाया, उसे मैं इनसानों से नहीं बचा सका . . . . . "४८

लेखक ने हवाई जहाज द्वारा गिरायी जानेवाली रोटियों, उस पर लोगों की प्रतिक्रिया आदि का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है - जिस वक्त हवाई जहाज से रोटियाँ काफिले के ऊपर फेंकी गयी उस वक्त लोगों में एक चेतना उत्पन्न हुई, हर एक आदमी छीना झपट्टी करने लगा, चिल्लाना शुरू हुआ, लोग एक - दूसरे को मारने लगे, एक - दूसरे से रोटी के टुकडे छीनने लगे, यह दिल दहला देनेवाला दृश्य था। - "जिन्हें कुछ टुकड़े मिल गए थे वह खुशी के मारे रो रहे थे। और जिनके हाथ में आकर भी रोटियाँ छीन गई थीं, उनमें से कुछ निराशा की सीमा पार करके हँसने लग जाते थे, आधों से ज्यादा रोटियाँ पैरों तले कुचली गई थीं, एक दर्जन से अधिक आदमी और बच्चे भी उनके साथ इसप्रकार कुचले गए थे की एक ओर उनकी चर्बी और दूसरी ओर खून में कुचली हुई रोटियों के आटे में भेद करना असंभव हो गया था।" ४९

इसतरह इस दृश्य-द्वारा लेखक ने विभाजन के वक्त हुई इन्सान की शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक दुर्दशा का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है, यह स्पष्ट किया है कि इस वक्त आम आदमी केवल रोटी के एक टुकड़े के लिये किसप्रकार मोहताज हुआ था।

सुलेमान का पुल अब कुछ ही गज की दूरी पर था जिसे पार करते ही हिन्दुस्तान की सीमा शुरू होती थी, सबके मन में एक उत्साह था। निर्मला के मन में केवल आनंद ही के विचार रहे थे, वह केवल शांति से हिन्दुस्तान पहुँचने की कामना कर रही है, आनंद इसवक्त बिलकुल निराश हो चुका था, और निर्मला उसकी निराशा दूर करने का प्रयास कर रही थी। वह उसी के कहे हुए वाक्यों को दोहराकर उसे प्रेरणा दे रही थी, - पुल के नीचे बहते हुए पानी को देखकर वह कहती है, - "अनंत है केवल इन लहरों की यह हँसी और इनका शांतिदायक संगीत - या फिर इस हँसती - गाती अनंतता के किनारे विचरनेवाला वह एक इन्सान, जो हर समय में हर जगह मौजूद रहा है - कभी ईसा के रूप में कभी मुहम्मद की शक्ल में या बुद्ध, कृष्ण और गांधी के रूप में . . . " ५० और इसवक्त इन वाक्यों पर ध्यान देकर आनंद सोचता है - "अनंतता तो केवल इस शांतिदायक संगीत ही को हासिल है, या फिर लहरों की इस उपहासपूर्ण हँसी को - या शांति अमर है या उपहास - यह दोनों सदा रहेंगे, परंतु कर्म, विजय और पराजय - इनको अमरता प्रदान नहीं की गई, यह कभी स्थायी नहीं हो सकते . . . . . " ५१

आनंद इसवक्त जीवन से बिलकुल निराश हो चुका है, वह सोचता है कि अमरता तो केवल इस शांतिदायक संगीत को है, इस कर्मरूपी कार्पिले को अमरता प्रदान नहीं की गई है . . . . . वह इस कर्म रूपी कार्पिले से निकलकर उन लहरों में कूद जाना चाहता है, उनका अमर साथी बन जाना चाहता है। औ इसतरह इन पंक्तियों से लेखक ने आनंद के साथ ही सारे कार्पिले के लोगों की निराशा को चित्रित किया है। निर्मला के मन में केवल एक ही आस थी कि जल्दसे जल्द उस पुल को पार कर जाना, ताकि उस पार शांति की आशा थी। पर आनंद अभी संभला नहीं था, आशा और निराशा की सीमा पर खड़ा जूझ रहा था। निर्मला को ऐसा लगा - "निराशा और आशा की मिली - जुली सीमा पर खड़ा वह बहादुर अपनी शक्ति के अंतिम कणों को भी इकट्ठा करके मुकाबले में जूझता दिखाई दे रहा था। ५२

आनंद और निर्मला अब पुल के पास पहुँच गये थे, अब सिर्फ पुल पार करना बाकी था, निर्मला का मन खुशी से लहराने लगा था, इतने में कहीं से कोई आनंद को बुला रहा था, निर्मला उसे मुड़कर भी देखने न देकर उसका हाथ पकड़कर और तेजी से आगे बढ़ी, फिर वही पुकार दुबारा आयी, उस पुकार में बड़ी ही आर्द्रता थी, इसलिये इसबार आनंद ने मुड़कर देखा, तो पुल के पिछले किनारे खड़े मौलाना उसे पुकार रहे थे। निर्मला निश्चित होब गयी, वह सोचने लगी कि, "अब वह समय आ गया, जो इस थकते हुए इनसान को शक्ति देगा और एक नया जोश।"५३ पर आनंद उनकी ओर बढ़ा नहीं केवल विचित्र - सी निगाहों से देखता रहा।

अन्तिम पृष्ठों में लेखक ने आनंद के कथन द्वारा यह स्पष्ट किया है कि, किसप्रकार इस विभाजन ने इनसान को जिंदा मार डाला था, हर आदमी एक लाश की तरह मालूम हो रहा था। उनमें न कोई जीने की इच्छा थी न कोई आस। इन सारी घटनाओं से आनंद अब बिलकुल निराश और उदास हो गया था॥ उसे अपने जीवित होने का बड़ा अफसोस है, - जब मौलाना एक बालक को हिफाजत के लिये, आनेवाले कल का इनसान कहकर उसे देने लगते हैं तो वह उनसे कहता है - "आज के इनसान के साथ जो तुमने किया, क्या वह काफी नहीं था ? तुम इतने जालिम क्यों हो छठ गए हो मौलाना ! आज की नसल का खून करने के बाद इस आनेवाली नसल पर भी क्यों जुल्म तोड़ रहे हो - तुमवे इसे मार क्यों डाला - ?" ५४ मौलाना के यह कहने पर कि "इसे मार डलाता - मैं ?५५ आनंद उपहास से कहता है - "नहीं तुम इसे आराम से क्यों मार डालते ! " - तुम तो यह चाहते हो कि यह भूख और प्यास से तड़प - तड़पकर मरे; और फिर जब उसकी माँ मिले तो उसकी छातियाँ भी कटी हुई हों। मैं अब तुम्हें पहचान गया हूँ। । मैं अब इन्सान को पहचान गया हूँ॥ उषा को मेरे साथ भेजकर तुमने उसे विष पिला दिया, उस लड़की को कैम्प छोड़कर उसे डसने के लिये साँप भेज दिया॥। माँ की छातियाँ काटकर तुम बच्चों को दे जाते हो । मैं तुम सबको पहचानता हूँ - तुम खुदा के इन बन्दों को इन हिन्दुओं और मुसलमानों को

इस लिये जिंदा रखना चाहते हो कि वे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रिफ्यूजी कैम्पों में पड़े सड़ जायें भूख से तड़प - तड़पकर मर जायें, तूफानी नदियों में डूब जायें लेकिन जो इन्हें मृत्यु की शांति प्रदान करना चाहते हैं, तुम उन्हें रोकते हो - मैं तुम्हें जान गया हूँ - तुम सब इनसान हो - तुम सब इनसान हो ! मैं इस मासूम को तुम्हारे चंगुल से मुक्ति दिलाऊँगा - मैं इसे बचाऊँगा।" [५६]

"यह कहकर उसने मौलाना के हाथ से बालक को छीनकर पुल के ऊपरसे दरियामें फेंक दिया। अन्तमें मौलाना ने सिर्फ इतना कहा, - "अफसोस - आखिर इनसान खुदखुशी कर रहा है!" [५७] आनंद मौलाना का गला घोंटता हुआ चिल्लाने लगता है, - "अगर वह खुदखुशी नहीं करेगा, तो मैं उसे मार डालूँगा - मैं उसे मार डालूँगा ..... मैं उसे मार डालूँगा ....." [५८] चारों ओर भिन्न भिन्न आवाजों और नारों का एकही शोर मच गया। दोनों ओर से सिपाहियोंने गोलियाँ दागनी शुरू कर दी - "इनसान आत्महत्या कर रहा है - मैं उसे मार डालूँगा - मार डाला - मैं बच गया - हा हा हा - हिन्दुस्तान जिंदाबाद - पाकिस्तान जिंदाबाद ....." इनसान मुर्दाबाद - इनसान मुर्दाबाद ..... !" [५९] आदि नारों से सारा वातावरण गूँज उठा।

प्रस्तुत परिच्छेद में लेखक ने विभाजन की विभीषिका में शिकार हुए लोगोंकी वास्तविक स्थिति का यथार्थ तथा मार्मिक चित्रण किया है। इसतरह लेखक को आनंद का पागल हो जाना ही इनसान का मर जाना प्रतीत होता है। क्योंकि इनसान का पागल होना मर - जानेसे कम नहीं। लेखक को यहाँ यह स्पष्ट करना है कि, घृणा और हिंसा का परिणाम व कितना भयानक होता है, जिसके कारण अन्तमें आनंद जैसा इन्सान भी चिल्ला उठता है - "यदि इन्सान आत्महत्या नहीं करेगा तो मैं उसे मार डालूँगा।" [६०]

* निष्कर्ष :-

सन १९४८ ई में लिखित रामानंद सागरजी के "और इन्सान मर गया" उपन्यास में घृणा, प्रतिशोध और साम्प्रदायिकता की बाढ़ में बहते

हुए मानवों की मनस्थिति; उनके आवेग भय और विवशता आदि का बड़ाही सजीव और मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है। विभाजन के समय हुए पंजाब का भयानक अग्निकाण्ड, शरणार्थियोंकी समस्या जैसे, रेलगाड़ियोंमें उनकी निर्मम हत्या, उजागरसिंह द्वारा अपने बच्चे की हत्या, पश्चिमी पाकिस्तानसे आनेवाले साठ मील लम्बे काफिले की यात्रा का वर्णन हवाई जहाजोंद्वारा गिरायी जानेवाली रोटियोंका वर्णन आदि इतना सजीव, यथार्थ तथा मनोवैज्ञानिक है कि मनपर गहरी छाप छोड़ जाता है।

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में यह भी स्पष्ट किया है कि, घृणा में विष की - सी शक्ति है, वह दूसरे को तो मारती ही है, अपने को भी नहीं छोड़ती हिंसा, वैर और हर पुण्य - भावना का सतीत्व नष्ट करना आदि चरमसीमा को पहुँच जायगा तो उसका एक मात्र परिणाम भयानक ही होगा, लेखक ने इसको मौलाना के शब्दोंमें स्पष्ट किया है - "इन कातिल कौमों के घर भविष्य में बच्चों की जगह लाशे ही पैदा हों - मरे हुए लड़के और ऐसी लड़कियाँ ही इस कौम की कोख से जन्म लें जिनका सतीत्व जन्मसे पहले ही नष्ट किया जा चुका हो, और फिर सारी की सारी कौम अपनेही आतंक और घृणा के मारे दरियाओं में कूद - कूदकर मर जाय -" और इन्सान "आनंद" के अंतर में मौजूद इन्सान की भाँति आत्म - हत्या कर ले। [६१]

घृणा और प्रतिशोध जिनकी बर्बरता का अंधकार मृत्यु के अंधकारसे कम नहीं यह बताते हुए उपन्यास की "भूमिका" में उपेन्द्रनाथ अश्कजी ने इसके बारेमें कहा है, - "मानव के गुण - दोष, उसकी विवशता और दृढ़ता - मृत्यु को सामने देखकर उसके समक्ष हथियार डाल देना अथवा अपने हथियारों को और दृढ़ता से पकड़ लेना, अपने सिध्दान्तों को अपनी जान बचाने के हेतु छोड़ देना अथवा अपने सिद्धान्तों के लिये अपनी जान की परवाह नहीं करना, अपने को बचाने के प्रयास में दूसरों के दुखों के प्रति तटस्थ

हो जाना अथवा दूसरों के दुखों को अपना बना लेना - मानव की यह विवशता और दृढ़ता आदि काल से चली आयी है। जहाँ तक मानवी की विवशता का सम्बन्ध हैं, सागरने उसे अपूर्व सफलता से इस उपन्यास में चित्रित किया है।[62]

प्रस्तुत उपन्यास में,लेखकने विभाजन के समय किस प्रकार इंसान इंसान न रहकर हिंसक पशु बन गया, उसने इंसानपरही कितने अत्याचार किये आदि का बड़ाही यथार्थ चित्रण किया है। इन्सान और इन्सान के बीच स्थापित उन सम्बन्धों को प्रस्तुत किया है जो विभाजन के कारण पहले घृणा और शत्रुतासे भरे थे,लेकिन वे ही सम्बन्ध मिटकर निःसंगता तथा वैराग्यमें किसप्रकार बदल जाते हैं, यह काफिले के चित्रणद्वारा स्पष्ट किया है.। और अन्तमें यह स्पष्ट किया है कि इन्सान का इन्सान की इन्सानियतपरसे कैसे विश्वास उठता है।

सारे उपन्यास में चित्रित यथार्थ वर्णनोंसे लेखक की प्रखर कल्पनाशक्ति प्रकट होती हैं। - जो उजागरसिंह द्वारा की हुई अपने परिवारवालों की हत्या, सात मील लम्बे काफिले का यात्रा - वर्णन आदि घटनाओं के चित्रण में स्पष्ट हुई है। अतः विभाजन के वक्त की सभी समस्याओं के चित्रण में उनकी मानवीय भावना की ही अधिक झलक मिलती है। उपन्यास की "भूमिका" में अश्कजीने कहा है, - "अनुभूत वस्तु की सन्निकटता किसप्रकार *प्रदान* कृति को आप - से - आप सजविता प्रदान कर देती है यह सागर के प्रस्तुत उपन्यास से ज्ञात होता है.। इसलिए मैं कहूँगा कि स्वयं उस हत्याकाण्ड का कुछ अंश देखने, उसके हर उतार - चढ़ाव को प्रतिदिन निरखने और उसका अंग बनने के कारण वह उस हत्याकाण्ड और उसमें मानव की सीधी - सादी पशु भावना का सफल और सजीव चित्रण कर सका और उजागरसिंह, अनन्ती और निर्मला जैसे यथार्थ चरित्र उपस्थित कर सका।[63]

इसतरह रामानंद सागरजीका प्रस्तुत उपन्यास "और इन्सान मर गया."... विभाजन सम्बन्धी उपन्यासों में एक सर्वश्रेष्ठ यथार्थ मनोवैज्ञानिक तथा मौलिक उपन्यास है।

-: सन्दर्भ सूची :-

१८ रामन

१. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया।, "हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, बनारस, प्रथमावृत्ती १०००, पृ, ६६

२. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," " पृ. ५३

३. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. ६१

४. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. ६५

५. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. ७२

६. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया, ! पृ. ७२

७. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. ७४

८. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. ७४

९. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. ७३

१०. रामानंदसागर० "और इन्सान मर गया," पृ. ९२

११. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. ९६

१२. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १०२

१३. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. ११९

१४. रामानंदसागर, "औरइइन्सान मर गया," पृ. १२५

१५. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १२५

१६. रामानंदसागर, "औरइइन्सान मर गया," पृ. १३७

१७. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १४०

१८. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया,", पृ. १४०

१९. रामानंदसागर, "और इन्सामन मर गया," पृ. १७३

२०. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १७३

२१. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १७७

२२. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १७४

२३. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १८९

२४. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १९०

२५. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया," पृ. १९१

२६.	"रामानंदसागर",	"और इन्सान मर गया,"	"हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस बनारस, प्रथमावृत्ती ३०००. पृ. १९१-१९२
२७.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. १९२
२८.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. १९२
२९.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २०५
३०.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २०५
३१.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २०४
३२.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २१९
३३.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २२०
३४.	रामानंदसागर,	"औरइइन्सान मर गया,"	पृ. २२५
३५.	रामानंदसागर,	"औरइन्सान मर गया,"	पृ. २१६
३६.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २१७
३७.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २२१९
३८.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २३०
३९.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया, [	पृ. २४९
४०.	रामानंदसागर,	"और इन्सानन मर गया,"	पृ. २५१
४१.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २६१
४२	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २५८
४३	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २६०
४४	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २५८
४५	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २६४
४६	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २७१
४७	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २७५
४८	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २८१
४९	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २७९
५०	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २८४
५१	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २८५
५२	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २८६
५३	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया,"	पृ. २८७-२८८

५४. रामानंदसागर	"और इन्सान मर गया",	हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, बनारस, प्रथमावृत्ती २०००,	पृ. २८८
५५. रामानंदसागर	"और इन्सान मर गया,"		पृ. २८९
५६. रामानंदसागर	"और इन्सान मगरय गया,"	हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस,	पृ. २८९
५७. रामानंदसागर	"और इन्सान मर गया,		पृ. २८९
५८. रामानंदसागर	"और इन्सान मर गया,"		पृ. २८९
५९. रामानंदसागर	"और इन्सान मर गया,"		पृ. २९१
६०. रामानंदसागर	"और इन्सान, मर गया,"		पृ. २८९
६१. रामानंदसागर	"और इन्सान मर गया,"	"भूमिका"	पृ. १७
६२. रामानंदसागर	"और इन्सान मर गया,"	"भूमिका"	पृ. ६
६३. रामानंदसागर	"और इन्सान मर गया,"	"भूमिका"	पृ. ८

****

"झूठा - सच" में चित्रित विभाजन की समस्या

"झूठा - सच" यशपाल का एक श्रेष्ठ एवं बृहद् उपन्यास है जो दो भागों में प्रकाशित हुआ है। प्रथम भाग "वतन और देश" सन् १९५८ ई. में और दूसरा भाग "देश का भविष्य" सन् १९६० ई. में प्रकाशित हुआ। प्रथम भाग में देश विभाजन की समस्या और दूसरे भाग में लोकतंत्र की तथा प्रेमविवाह की समस्या को प्रस्तुत किया है। यशपाल ने इस उपन्यास में विभाजन के समय पंजाब, बंगाल तथा कलकत्ता में उत्पन्न भीषण परिस्थितियों, नेताओं की स्वार्थपूर्ण राजनीति, राजनीतिक स्वार्थपरता के लिये साम्प्रदायिकता का उपयोग, वर्ग - विषमता, जातिवाद, अफसरशाही, सरकारी कर्मचारियों का भ्रष्टाचार आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया है॥

* * राजनीतिक समस्या :

* * देश - विभाजन में अंग्रेजों की कूटनीति :

देश विभाजन के पीछे अंग्रेजों की गहरी चाल थी। इसके पीछे आर्थिक प्रश्न छिपा हुआ था। अंग्रेज यह अच्छीतरह जानते थे कि भारत का विकास एक इकाई के तौरपर हुआ है, यदि विभाजन हुआ तो दोनों भाग पंगु हो जायेंगे। विभाजन से अंग्रेजों को लाभ पहुँचेगा - "पाकिस्तान औद्योगिक सामान के लिये तरसेगा शेष भाग कच्चे माल के लिए॥"[१]

"अंग्रेजों को कांग्रेस से कोई डर नहीं है, क्योंकि वे पूरे देश में साम्राज्यवाद का जाल फैलाकर, मुनाफे का क्रम बनाये रख सकते हैं। उन्हें डर है तो जनवादी प्रजातन्त्र की स्थापना से॥"[२] शासक वर्ग, धर्म जाति, सम्प्रदाय, भाषा के आधार पर भारत को विभाजित करने का प्रयास करता है॥ अंग्रेज शासक इस बात को अच्छीतरह जानते थे कि "सब शासन - व्यवस्थाओं की नींव सामाजिक भूमिव्यवस्था पर ही होती है, किसानों की ओर से सरकार आते संकट को टालने का फिलहाल यही उपाय हो सकता है कि वे अपनी समस्या को साम्प्रदायिक झगड़ों में ही भूले रहें॥"[३]

विभाजन के लिये स्वयं एटलि लोग को प्रोत्साहित कर रहा था॥ अंग्रेजों ने बँटवारे की जिम्मेदारी इसीलिए ले ली थी कि वे अपने हित के अनुकूल बँटवारा कर सकें। अंग्रेजों की इसी कूटनीति के आगे गाँधी और कांग्रेस पार्टी द्वारा देश - विभाजन

को रोकने के लिये किये गये सारे प्रयत्न विफल हो गए।

"झूठा - सच" में यशपाल ने कम्युनिस्ट कार्यकर्ता प्रद्युम्न द्वारा अंग्रेजों की नीति को स्पष्ट किया है। - "हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान भाइयो! आपने अपनी आँखों से देख लिया है कि अंग्रेज सरकार और उसके टोड़ी कुत्ते हमें आपस में लड़ा देने की कैसी साजिशें करते हैं। इस जुलूस में हमारी मुसलमान और हिन्दू बहनें एक साथ हैं। यह लोग खिजर की तानाशाही और शहरी आजादी छिननेवाले काले कानूनों की मुखालफ्त कर रही है। दोस्तो, कांग्रेस, लीग, हिन्दू - महासभा और अकाली पार्टी का संयुक्त मंत्री - मंडल कायम करो।"[४]

** पंजाब की युनियनिस्ट पार्टी :

पंजाब में युनियनिस्ट पार्टी की मिनिस्ट्री थी। जिसके नेता सर खिजर थे। मुस्लिम लीग के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर खिजर ने साजिश की - मुस्लिम लीग और अंग्रेज गवर्नर से मिलकर गवर्नर के इशारोंपर अचानक त्यागपत्र दे दिया। इस अचानक त्यागपत्र दे देने से राजनीतिक संकट खड़ा कर दिया। इस व्यवहार से पंजाब की जनता चकित थी। इस सम्बन्ध में खिजर का वक्तव्य था - "जून १९४८ ई. में हिन्दुस्तान के जिस भाग में जिस राजनैतिक दल का मंत्रिमण्डल होगा, ब्रिटिश सरकार उसी दल को स्थानीय शासन सौंप देगी, इसलिये नये सिरे से मंत्रिमण्डलों के निर्माण का अवसर दिया जाना चाहिए।"[५] इससे यह स्पष्ट है कि - पंजाब में मुस्लिम लीग को शासन व्यवस्था सौंप दी जायें।

जो मुस्लिम - लीग खिजर को पहले अपना शत्रु मानती थी, वही आज खिजर को अपना भाई मानने लगी, विशाल जुलूस निकालकर नारे लगाने लगी - खिजर हमारा भाई है। अल्लाहो अकबर! मुस्लिम लीग जिन्दाबाद! कायदे आजम जिन्दाबाद! हँस के लेंगे पाकिस्तान! लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान!

पंजाब का गवर्नर जेकिन्स असेम्बली में बहुमतवादी पार्टी मुस्लिम - लीग को मंत्रिमण्डल बना देने को तैयार नहीं था। राजनैतिक दलों को आपस में लड़वा कर पंजाब का शासन वह अपने हाथ में रखना चाहता था। वह पंजाब में पुलिस द्वारा उपद्रव मचा रहा था, और उसका मत था कि, ऐसी स्थिति में किसी भी पार्टी को सत्ता सौंपना उचित नहीं होगा, उसकी चाल तो यह थी कि एटलि के निर्णयानुसार

जून १९४८ में जिस प्रान्त में जिस पार्टी का मंत्रि - मण्डल होगा उस प्रान्त का शासन उसी पार्टी को सौंपा जाएगा। इसलिए जेकिंस जून १९४८ तक किसी भी पार्टी का मंत्रिमण्डल बना देने को तैयार नहीं था, अत: पंजाब को संभालने की जिम्मेदारी अंग्रेजों के ऊपर ही रहेगी।

पंजाब में गवर्नर के संकेत पर ही मजदूरों को भड़काने के लिये, रेल्वे वर्कशाप में बम फेंका गया। अनेक मजदूर मारे गए, सैकडों घायल हो गये। "रेल्वे यूनियन के पैंतालिस हजार मजदूर अबतक दंगे के खिलाफ थे इसीलिए पंजाब में अब तक शान्ति थी, इस घटना से वे भी भड़क उठे परिणामत: भयंकर दंगे हुए, हिंसा, आगजनी, लूटमार आदि घटनायें बढ़ीं।

** देश - विभाजन में कांग्रेस की नीति :

कांग्रेस पार्टी तथा महात्मा गांधी के वक्तव्योंसे जनता को पूर्ण विश्वास हो गया था कि देश - विभाजन नहीं होगा। गांधीजी कहते थे - "पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा।" परन्तु अन्त में लीग के सामने कांग्रेस को झुकना पड़ा॥ और गांधी जी की इच्छा के विरुद्ध १४ जून १९४७ को कांग्रेस ने देश का विभाजन स्वीकार कर लिया। कांग्रेस की इस नीति से जनता के विश्वास को जबर्दस्त धक्का लगा; देश के नेताओं के प्रति लोगों का आदर खत्म हुआ। - "सत्य - अहिंसा क्या हुई ? इनसे तो अच्छा जिन्ना है, जो कहता है, सीधा मुँह पर थप्पड़ मार कर कहता है।" उसका जबाब तो मास्टर तारासिंह है।"[6] उपर्युक्त बातों के द्वारा लेखक ने राजकीय नेताओं पर व्यंग्य कसा है॥

देश - विभाजन के साथ - साथ पंजाब विभाजन को भी स्वीकार कर लिया गया, कांग्रेस ने बंगाल और पंजाब को हिन्दु - बहुल तथा मुस्लिम - बहुल भागों में बाँटने की शर्त स्वीकार कर ली। इस समझौते से परिस्थिति और भी गंभीर बन गयी। क्योंकि पंजाब का जो पश्चिमी भाग पाकिस्तान को दिया जानेवाला था, वहाँ ..... सत्तर ..... अस्सी प्रतिशत लोग और भूमि सिक्खों और हिन्दुओं की थी।" ऐसी ही स्थिति लाहोर की भी थी। - "लाहोर में मुसलमान इक्यावन प्रतिशत हैं लेकिन जायदाद तो अस्सी प्रतिशत से ज्यादा हिन्दुओं की है।" पूर्वी पंजाब के जालन्धर, लुधियाना, अमृतसर आदि शहरों में कारीगर मुसलमान होने के कारण मुसलमानों की संख्या अधिक थी॥" अत: अधिकांश जनता पंजाब विभाजन के

पक्ष में नहीं थी॥ यशपाल ने लोगों की मानसिकता को मिर्जा द्वारा स्पष्ट करते हुए कहा है। - "जिन हिन्दुओं को मुसलमानों से और मुसलमानों को हिन्दु -सिक्खों से, लोगों को अपनी पुश्तैनी जगहों से अलग करना वैसा ही है जैसे जिस्म के माँस को हड्डियों से अलग करना।"[७] यशपाल ने उपन्यास के प्रमुख पात्र जयदेव पुरी द्वारा भी विभाजन की प्रतिक्रिया व्यक्त करते, लोगों का मत ही व्यक्त किया है। - "पाकिस्तान का मतलब (पंजाब) में मुस्लिम लीग की मिनिस्ट्री ही तो है। किसी की मिनिस्ट्री हो, हिन्दुओं - मुसलमानों को तो गली-मुहल्ले में एक साथ ही रहना है। हमें मिनिस्ट्रियों से क्या मतलब है ? हमें तो अपने पड़ोसियों से निबाहनी है।"[८]

पाकिस्तान की स्थापना के बाद कॉंग्रेस तथा लीग ने घोषणा की कि, हिन्दुस्तान में अल्पसंख्यक हिन्दुओं और सिक्खों के जानो - माल की पूरी रक्षा की जिम्मेदारी नयी सरकारें लेंगी, लेकिन यह आश्वासन लोगों के साथ एक बड़ा धोखा था॥ यह राजनैतिक दल अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिये विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेने किसप्रकार प्रेरित करते हैं इसका वर्णन यशपाल ने "झूठा - सच" में किया है॥ लाहौर के विद्यार्थियों में देश - जागृति की भावना तथा विचार - साम्य होने के कारण कुछ विद्यार्थी मुस्लिम लीग का समर्थन करते हैं तो कुछ कॉंग्रेस का॥ कुछ गुप्त राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेते हैं। उपन्यास का प्रमुख पात्र पुरी भी सन् १९४३ ई. में गुप्त राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेने के कारण जेल में बन्द कर दिया गया था।

पंजाब की जनता को कॉंग्रेस का आश्वासन तथा कॉंग्रेस और लीग में समझौता आदि का यथार्थ वर्णन "झूठा - सच" में किया है, जो ऐतिहासिक सत्य है॥ पंजाब विभाजन से लाहौर की राजनैतिक स्थिति तनावग्रस्त हो गयी, अनेक स्थानों पर आग लगने, लूटपाट, छुरेबाजी की घटनाएँ घटीं, राजगढ़ पर हिन्दुओं का आक्रमण करके मुसलमानों को मार डालना, प्रतिशोध के कारण मुसलमानों की सहायता के लिये मुस्लिम पुलिस अधिकारियों का शहालमी बाजार में हिन्दुओं के दुकानों को कर्फ्यु के समय आग लगवाना, आग बुझाने आये व्यक्तियों को कर्फ्यु में निकलने के जुर्म में गोलियों से मार डालना आदि घटनाएँ इसी राजनैतिक यथार्थ के उदाहरण है॥

"झूठा - सच" के द्वितीय भाग में यशपाल ने विभाजन के बाद इन्हीं कॉंग्रेसी नेताओं की बदली हुई स्वार्थपरक वृत्ति का चित्रण किया है। देश को स्वाधीन

बनाने में कॉंग्रेस की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, लेकिन स्वाधीनता के पश्चात् कॉंग्रेस की नीति में परिवर्तन - सा आ गया। उनकी त्यागी तथा सेवाभावी भावना लुप्त - सी हो गयी॥ गांधी जी के महान उद्देश्यों, सत्य - अहिंसा आदि का इन कॉंग्रेसियों ने अपने स्वार्थ के लिये दुरुपयोग किया। जनता की राय थी कि कि इन सारी समस्याओं का तथा देश के विभाजन के जिम्मेदार यही राजनैतिक दल कॉंग्रेस और मुस्लिम लीग हैं॥ पाकिस्तान से विस्थापित हिन्दु शरणार्थियों की जवान स्त्रियों को रोजगार दिलाने के बहाने उनकी सहायता करने के लिये कॉंग्रेसी नेताओं ने किसप्रकार उनसे रिश्वत ली उसका मार्मिक चित्रण यशपाल ने "झूठा - सच" में किया है॥ - "दिल्ली शरणार्थी कैम्प में कैम्प के इंचार्ज प्रसाद तथा उत्तर प्रदेश विधानसभा के नेता अवस्थी द्वारा तारा - कनक को फँसाने का प्रयत्न तथा उन दोनों का प्रखरता से विरोध करके अपने को संभालना ..... कॉंग्रेसियों की इसी नीति का यशपाल ने गिरजा बाबू द्वारा क्षोभ प्रकट किया है॥ -"लुच्चे कहीं के, कॉंग्रेस को बदनाम करते हैं। मुझे मरते थे, जेल काटते थे, तभी तक भले थे। क्या कहते हैं, कुर्सी पर बैठते ही दिमाग बिगड़ गये। कुत्ते को घी थोड़े ही पचता है॥"[९]

आजादी के बाद शासकीय सूत्र पूँजीपति वर्ग के प्रतिनिधि कॉंग्रेसी नेताओं के हाथों में आ गया। उस समय देश की आर्थिक स्थिति में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ, शोषक - शोषक रहा और शोषित - शोषित, पूँजीपतियों को धन कमाने की खुली छुट दी गई। लेखक मर्सी के माध्यम से स्पष्ट करता है। - "क्या चेंज है ? और भी बुरा हाल है। पूँजीपतियों के हौसले बढ़ गये हैं कि अब तो हमारे चन्दों से पलनेवालों का राज है॥ बेचारे मजदूरों से हड़ताल का अधिकार भी छीन लिया।"[१०]

** देश - विभाजन के समय लीग की नीति :

देश का विभाजन करके पाकिस्तान बनाने की माँग ने सन् १९४० ई. में जोर पकड़ना प्रारम्भ किया। दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद तो उन्होंने "डायरेक्ट एक्शन" आन्दोलन शुरू किया जिससे हिन्दुओं को आतंकित किया गया, लूटमार कर हिन्दुओं को मुस्लिम बहुल क्षेत्रों से भागने को विवश किया। मुस्लिम लीग की इस माँग का कॉंग्रेस विरोध करती रही। इसतरह एक ओर मुस्लिम लीग और दूसरी

और कॉंग्रेसी नेताओं के इस झगड़े, आरोप - प्रत्यारोप के कारण ही विभाजन ने और जोर पकड़ लिया।

मुस्लिम - लीग ने बंगाल में अपनी सरकार बनाते ही डायरेक्ट एक्शन शुरू कर दिया, जिसका उद्देश्य था बंगाल से हिन्दुओं को भगाना और कलकत्ता को जबरदस्ती पाकिस्तान में मिलाना। मुस्लिम लीग इसीलिए पंजाब की युनियनिस्ट मिनिस्ट्री गिराना चाहती है। युनियनिस्ट मिनिस्ट्री गिरने पर लीग को मंत्रिमण्डल बनाने का अवसर प्राप्त होगा साथ ही "डायरेक्ट एक्शन" शुरू किया जाएगा। इसका उदाहरण देते हुए लेखक ने "झूठा - सच" प्रथम भाग में लीगी अब्दुल बारा असद से कहा है - कायदे आजम हमेशा कहते हैं कि कॉंग्रेस मुसलमानों की नुमाइन्दगी नहीं कर सकती, वह हिन्दुओं की जमात है।"[11] मुस्लिम - लीग के जिलास्तरीय नेता भी यह बात स्पष्ट रूप से कहते हैं - मुसलमानों का कॉंग्रेस को समर्थन दिल से नहीं है।[12]

एक ओर देश की स्वाधीनता का आन्दोलन समाप्ति पर था तो दूसरी ओर मुस्लिम लीग तथा मि. जिन्ना की नीति ने पाकिस्तान की मॉंग कर सारे देश की जनता को चौंका दिया। मुस्लिम - लीग को वायसराय की अप्रत्यक्ष रूप से सहायता होने के कारण उनके हौसले और भी बढ़े। विशेषकर मुस्लिम लीग की १६ अगस्त १९४६ ई. को "प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस" संबंधी घोषणा ने तो साम्प्रदायिक आग को और भी भड़का दिया, सारे देश की स्थिति गंभीर बन गयी। कलकत्ता और बंगाल में आतंक बढ़ गये, खून की नदियॉं बहीं। केवल कलकत्ते में ही मुस्लिमों ने दस हजार हिन्दुओं को खत्म कर डाला और सैकड़ों हिन्दू नारियों की इज्जत लूटी, उन्हें सड़कोंपर नग्न घुमाया, स्त्रियों ने इसी लज्जा से कुँओं में कूदकर आत्महत्याएँ कीं। मुस्लिम लीग की मॉंगे थीं, हम पाकिस्तान बनायेंगे, हम आधा हिन्दुस्तान लेंगे, पंजाब को पाकिस्तान में लेंगे, हिन्दुओं को वहॉं से निकाल देंगे।"[13]

लेखक ने "झूठा - सच" के कथानक का आधार तत्कालीन पंजाब की राजधानी लाहौर को बनाया है। उस समय लाहौर राजनीति तथा मुस्लिम लीग के बढ़ते प्रभाव का मुख्य केन्द्र था। पंजाब की युनियनिस्ट मिनिस्ट्री तथा मुस्लिम - लीग दोनों में विरोध था। लीगियों को मुख्यमंत्री खिजर, प्रथम दुश्मन लगता था। मुस्लिम - लीग की इस नीति का कॉंग्रेस विरोध करती थी।

उस समय विभिन्न दल अपने - अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये जुलूस निकालते थे॥ तथा जलसों का आयोजन करते थे। लाहौर में भी नित्य कोई - ना - कोई जुलूस निकलता था, "झूठा - सच" में लाहौर में निकालने वाले राजनीतिक दलों के जुलूसों और जलसों का विशद चित्रण है। उस समय लाहौर के सुन्दर बाजारों में अनारकली को महत्त्वपूर्ण स्थान था, अनारकली में से हररोज सन्ध्या मुस्लिम लीग "अल्लाह हो अकबर", "मुस्लिम - लीग जिन्दाबाद", "कायदे आजम जिन्दाबाद", "पाकिस्तान ले के रहेंगे", के नारे लगाते जुलूस निकालते थे। इसमें अधिक लोग नहीं होते थे, कुछ मुस्लिम - लीग के स्वयंसेवक तथा मुस्लिम विद्यार्थी हरे झण्डे लिए इन जुलूसों में रहते थे॥ इन जुलूसों तथा नारों के कारण सारे लाहौर में आतंक फैल गया, अफवाहें फैल गयीं, मार - पीट, आगजनी के सिलसिले बढ़े। लाहौर की राजनीति में चारों ओर से दबाव आने पर बदलाव - सा आ गया। इस दबाव को खिजर सह न सका, उसने अपना त्यागपत्र दे दिया। जो मुस्लिम लीग खिजर को पहले अपना शत्रु मानती थी, वही खिजर के समर्थन में विशाल जुलूसों में नये नारे लगाने लगी; नयी खबर आयी है खिजर हमारा भाई है॥ जब मुस्लिम मण्डल बनाने के लिए आमंत्रित नहीं करेगा तब उसने विशाल जुलूस निकाल कर अपनी शक्ति को प्रदर्शित किया।

मुस्लिम - लीग के तथा आम जनता के विरोध को देखकर गवर्नर ने एक और चाल चली, "पंजाब असेम्बली के लीग पार्टी के लीडर खान ममदोट को पंजाब के गवर्नर ने हिन्दुओं - सिक्खों को शामिल किये बिना वजारत कायम करने का मौका देने से इंकार कर दिया" गवर्नर के इस निर्णय पर मुस्लिम - लीग भड़क उठी। पंजाब पुलिस में ज्यादा मुसलमान ही थे, उन्होंने गवर्नर के निर्णय का विरोध किया; शान्तिपूर्ण जुलूसों पर लाठी चलाई, सभाओं में गोलियाँ चलायीं वातावरण में तहलका मचा दिया। इससे लाहौर की स्थिति बिगड़ गयी, आगजनी मारकाट की घटनाएँ बढ़ीं।

पाकिस्तान तथा पंजाब के विभाजन के बाद लाहौर की राजनैतिक स्थिति में तनाव बढ़ता गया। अनेक स्थानों पर आग लगने, छुरेबाजी की घटनाएँ घटी, कर्फ्यु लगे, राजगढ़ पर हिन्दुओं ने आक्रमण करके मुसलमानों को मार डाला,

परिणामस्वरूप मुसलमानों की सहायता के लिये कर्फ्यू के समय मैजिस्ट्रेट ने अपने सामने शहालमी के बाजार में हिन्दुओं की दुकानों के किवाड़ तुड़वा कर मिट्टी का तेल छिड़कवा कर आग लगवा दी। और जो लोग आग बुझाने आये, उन पर कर्फ्यू में बाहर निकलने के अपराध में गोली चलाकर मार डाली। पाकिस्तान के अस्तित्व में आने के बाद इन्हीं लीगियों द्वारा हिन्दुओं को जबर्दस्ती से घरोंसे निकालना, विस्थापित यात्रियों की गाड़ी में ही हत्या करना आदि का बड़ा मार्मिक चित्रण लेखक ने "झूठा - सच" में किया है। इसतरह उपर्युक्त सभी समस्याओं के लिये कारण मि. जिन्ना जैसे राजनैतिक नेता ही थे।

** कम्युनिस्ट पार्टी :

देश - विभाजन में कम्युनिस्टों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। "झूठा - सच" में पंजाब की तत्कालीन राजधानी लाहौर में साम्यवादी विचारों से प्रभावित युवकों ने मिलकर "स्टूडेन्ट फेडरेशन" नाम की संस्था का निर्माण किया था, जिसमें सभी धर्मों के लोग थे। तारा, असद, नरेन्द्रसिंह, सुरेन्द्र आदि प्रमुख सदस्य थे। इस संस्था का उद्देश्य था लाहौर के साम्प्रदायिक दंगों को रोकना, तथा और एक उद्देश्य यह भी था कि लाहौर में धर्म के नाम पर मानव का इतना पतन न हो जाए कि वह अपने साथियों को ही मारने - काटने लगे। कम्युनिस्ट कार्यकर्ता असद सोचता है, हिन्दु मुस्लिम मुहल्लों में जहर फैलाया जा रहा है। मुल्ला रो - रोकर मस्जिदों मे पैगम्बर के नाम पर जिहाद के फतवे दे रहे हैं, हथियार इकट्ठे किये जा रहे है, पर इस ओर मुख्यमंत्री खिजर का ध्यान ही नहीं है। तब असद ने गवर्नर के एडवाइजर डॉ. प्राणनाथ से मिलकर गवर्नर का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया। -"हिन्दु और मुस्लिम मुहल्लों में जहर फैलाया जा रहा है। मुल्ला मस्जिदों में रो - रोकर पैगम्बर के नाम से जिहाद के लिये फतवे दे रहे हैं। हथियार इकट्ठे करने की योजनाएँ बन रही हैं । यहाँ दंगों की ऐसी आग भड़केगी की कलकत्ता से भी ज्यादा खून होगा। अगर खिजर परवाह नहीं करता तो गवर्नर का ध्यान इस ओर दिलाया जाना चाहिए।"[१५]

लाहौर में जब भी कोई जुलूस निकलता दंगे अवश्य होते॥ "स्टूडेन्ट फेडरेशन" का प्रयन्त रहता कि लाहौर में निकलनेवाले जुलूसों में आपत्ति रहित नारे लगाये जायें, साम्प्रदायिक नारे न लगायें जायें, " स्टूडेन्ट फेडरेशन" विभाजन के विरुद्ध थी। असद कहता है -, "हम मुल्क में बँटवारे का विरोध करते हैं। पाकिस्तान का मतलब क्या है - कि हिन्दुस्तान के एक सूबे में काँग्रेस की मिनिस्ट्री हो सकती है, तो दूसरे में लीग की। यही हके - खुद - इख्तियारी है। "१५ "स्टूडेन्ट फेडरेशन" ने रेल्वे मजदूर युनियन से मिलकर लाहौर में "शान्ति - स्थापना के लिए कामरेड इब्राहिम के नेतृत्व में "शान्ति के लिए जंगी आन्दोलन" आरम्भ किया था और इतना बड़ा जुलूस निकाला था जितना मुस्लिम - लीग भी नहीं निकाल सकी थी। जुलूस के ऊपर पैरों की धूल का बादल - सा छाया था। "काँग्रेस, लीग, अकाली दल एक हो, जम्हूरी वजारत कायम हो", "फिरकापरस्ती मुर्दाबाद" आदि नारे लगाये गये। इस संस्था का विभिन्न सम्प्रदायों के भेदभाव को कम करने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

यशपाल ने "झूठा - सच" में काँग्रेस पार्टी के साथ - साथ कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों तथा अधिनायकवादी प्रवृत्ति का भी यथार्थ चित्रण किया है। - लेखक ने शासन के नाम पर अधिनायकत्व की प्रवृत्ति तथा समय - समय पर बदलनेवाली साम्यवादियों की नीति तथा कार्यक्रमों की कड़ी आलोचना की है । लेखक कहते हैं कि इसी परिवर्तनीय नीति - नियमों के कारण कम्युनिस्ट जनविश्वास को नहीं पा सकते।

"झूठा - सच" में लेखक ने राजनैतिक समस्या के साथ - साथ देश - विभाजन के समय स्थित सामाजिक समस्या को भी यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

** सामाजिक समस्या :-

सामाजिक समस्या में लेखक ने लोकतंत्र की समस्या, प्रेम और विवाह की समस्या, बेकारी तथा भ्रष्टाचार की समस्या, नारी की समस्या, शरणार्थियों तथा रिफ्यूजी कैम्पों की समस्या आदि समस्याओं को स्पष्ट किया है ।

**लोकतंत्र की समस्या :-

उस समय लोकतंत्र की चेतना भी एक समस्या बन गयी थी। भारतीय जनता की रूढी - परम्पराओं को माननेवाली थी इसलिये उस समय लोकतंत्र मजबूत नहीं बन सका। इस समस्या का और भी कारण है - जनता में व्याप्त अन्धभक्ति। इसी अन्धभक्ति के कारण देश की जनता ने सत्ता नेताओं में अधिनायकवादी प्रवृत्ति बढ़ी। लोकतंत्र की अस्थिरता ने देश में चारों ओर भ्रष्टाचार फैल गया पूँजीपति वर्ग ने देश की शासकीय तथा आर्थिक सत्ता अपने हाथ में ली।

इसी लोकतंत्र की समस्या को यशपाल ने "झूठा - सच" में अनेक उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत किया हैं। - देश स्वतंत्र हो जाने के बाद भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया, लोकतंत्र का विरोध करते हुए उपन्यास का पात्र क्रान्तिकारी माथुर कहता है - "अँग्रेजों के जमाने में जो विचार स्वातंत्र्य था, वह ~~स्वा~~ स्वाधीन भारत में नहीं है - हमें तो शरम आती है। अँग्रेज सरकार ने अदालत में दिए गए भगतसिंह के बयान को जब्त नहीं किया था, इस सरकार ने गोड्से का अदालती बयान जब्त कर लिया है। क्या इनके पास गोड्से के लिए जवाब नहीं है ? मुँह बन्द कर देना डेमोक्रेसी है ?"[१६]

और एक प्रसंग में मर्सी अपना विरोध व्यक्त करती है - "क्या चेंज है ? और भी बुरा हाल है। पूँजीपतियों के हौसले बढ़ गए हैं। अब तो उनके चन्दों से पलनेवालों का राज है। बेचारे मजदूरों से हड़ताल का भी हक छीन लिया। कंट्रोल हटा दिये हैं कि, पूँजीपति मनभर कमाये और काँग्रेस को चन्दा दें। लोगों को क्या मिला ? गल्ला - कपड़ा लड़ाई के जमाने में उतना महँगा नहीं था, जितना अब है।"[१७]

इस लोकतंत्र की समस्या से गरीब आदमी किसतरह पीड़ित था, इसे किसान बेलासिंह का उदाहरण देकर लेखक ने स्पष्ट किया है। किसान जाट बेलासिंह की जमीन धोखे से हासिल की जाती है। इस पर बेलासिंह अनशन करता है। उस वक्त बेलासिंह नेताओं की कूटनीति का विरोध करते हुए कहता है - "तुम लोग बंगलों में पलंगोंपर लिहाफ ओढ़कर मेम्बरी के ऐश करो, कुणा के

हलवे खाओ, लस्सी दूध पियो। तुम्हें हमारी चिट्ठी पढ़ने की फुर्सत कहाँ ?"[१८] तब जयदेव पुरी कहता है - "कानून तो सब के लिए बराबर है॥ मैं कानून को नहीं बदल सकता। तुम्हें शिकायत है कि इन्साफ नहीं हुआ तो अदालत में अपील करों।" इसपर बेलासिंह क्रोधित हो उठता है॥ - "देखता नहीं है, बदन ढकने को और पेट भरने को पैसा नहीं है॥" तू मुझे अदालत में मुकदमा लड़ने की बातें सिखाता है। मैं सब जानता हूँ, तुम्ही कानून बनानेवाले हों, तुम्ही अदालत में फैसला देनेवाले हो। दसौंदासिंह अपनी हिम्मतपर मेरी जमीन छीन लेता तो मैं समझ लेता कि मैं नकारा हूँ, जिन्दा रहने लायक नहीं हूँ। बाल बच्चों को लेकर कुएँ में कूद पड़ता॥ तुम्हारी पुलिस ने मुझे जमीन से हटाया है, तो तुम्हारी पुलिस मुझे दुसरी जमीन दे या तुम दो।" १९ तब पुरी पुलिस बुलाने की धमकी देता है, तो बेलासिंह कहता है - अँग्रेजों के पुलिस के डंडे खाये हैं। अब तेरी काँग्रेसी पुलिस के डंडे भी देखलें लें, तू पुलिस फौज बुला सकता है, हमें जमीन नहीं दे सकता तू मौज कर, जरा हमारी हालत भी देखता जा। अन्त में बेलासिंह को पुलिस लेकर गयी वह बेचारा न्याय माँग रहा था लेकिन उसे जेल भेजा गया॥ इसतरह लेखक ने लोकतंत्र का विरोध व्यक्त किया है। सामाजिक समस्या में दूसरी समस्या प्रेम और विवाह की है।

** <u>प्रेम और विवाह की समस्या :-</u>

प्रेम और विवाह की समस्या को लेखक ने उपन्यास के पात्रों द्वारा - अमद, सोमराज, नाथ, कनक, पुरी, गिल, शीलो, मोहनलाल, रतन द्वारा स्पष्ट किया है। उस वक्त पूँजीवादी समाज में नारी को केवल भोग की वस्तु मात्र माना गया था। उसे केवल किसी की पुत्री, पत्नी, माता बनने का अधिकार मात्र था। लेखक कों नारी के प्रति अत्यन्त सहानुभूति थी इसलिए लेखक ने समाज में पुरुष के साथ समानाधिकार पाने के लिए नारी को प्रथम आर्थिक रूप से सबल बनाया। ताकि वह पुरुषों के अन्याय का विरोध कर सकें। इसी विरोध को लेखक ने "झूठा - सच" में अनेक उदा. द्वारा स्पष्ट किया है -

उपन्यास की नायिका तारा असद नामक युवक से प्रेम करती है लेकिन घरवाले उसका ब्याह मोमराज नामक एक लंगे युवक से करते हैं। यह ब्याह तारा के प्रति बड़ा अन्याय था, तारा भी इस अन्याय का कड़ा विरोध करती है, वह ससुराल से भाग जाती है। लेकिन नब्बू तथा हारफिज के जाल में फँस जाती है। लेकिन वह हिम्मत नहीं हारती, वहाँ से भी निकलकर बाद में वह दिल्ली पहुँचती है और वहाँ अच्छी नौकरी पाती है। और अन्त में सभी बातों का पता होते हुए भी डा. नाथ उससे विवाह कर लेते हैं। इसीतरह लेखक ने कनक तथा पुरी का उदाहरण भी दिया है। कनक तथा पुरी एक - दूसरे से बहुत प्यार करते हैं, कनक घरवालों के विरोध को न मानकर पुरी से विवाह कर लेती है। बाद में पुरी तथा कनक विचारों की विषमता के कारण दोनों को अलग होना पड़ता है। और अन्त में कनक गिल से प्रेम करने लगती है। इसतरह लेखक विवाह को अधिक महत्त्व नहीं देते वे प्रेम को मानते हैं। इसलिए उर्मिला - पुरी, कनक - गिल, शीला - रतन बिना विवाह किये पती - पत्नी के रूप में रहने लगते हैं।

इसतरह लेखक ने नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए ही प्रेम और विवाह की समस्या को "झूठा - सच" में स्पष्ट किया हैं।

** बेकारी तथा भ्रष्टाचार की समस्या :-

दूसरे युद्ध के समाप्त होने पर देश में खाद्यसामग्री का अभाव हो गया। इसलिए लोगों को राशन की लाईनों में घण्टों प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। - "जयदेव पुरी को एक रुपये के चीनी के लिये पौने दो घण्टे तक क्यू में खड़ा होना असहय व्यथा जान पड़ी। कहाँ देश की स्वतंत्रता के लिये जुझ जाने का विचार और सेर भर चीनी के लिये संघर्ष। परन्तु इससे बचाव न था।"[२०] पुरी जब भोलापाँये की गली से मोची दरवाजे की ओर जाता तो उसे मुसलमानों के मकानों के दरवाजों पर पर्दे के लिये लटकाये गये टाट सज्जित न दिखाई देते। मर्दों के कुर्ते, सलवारें, तहमत फटे हुए, गन्दे होते। यह सब स्थिति बेकारी की वजह से थी।

शिक्षित लोगों में व्याप्त बेकारी उस समय एक बड़ी समस्या थी। पुरी अपनी बहन की फीस भरने के लिये अपने साथी कालियरण से मदद माँगने जाता है, लेकिन कालियरण एम. ए. कर लेने के बाद भी बेकार हैं, वह अनेकों दरख्वास्ते दे चुका था, सिफारिशें भेजी थी फिर भी बेकार था। पुरी को भी नौकरी के लिये बहुत कष्ट उठाना पड़ा। बेकारी के साथ - साथ लेखक ने भ्रष्टाचार की समस्या को भी "झूठा - सच" में प्रस्तुत किया है।

उस समय भ्रष्टाचार उपर से लेकर नीचे तक सभी स्तरों स्तरोंपर व्याप्त था। आजादी के बाद तो भ्रष्टाचार को अधिक चालना मिली। भ्रष्टाचार से अधिक पीड़ित देश का गरीब आदमी था। इस भ्रष्टाचार का सबसे पहला विरोध "नाजिर दैनिक पत्र" ने किया - " सरकार का रुपया जनता का रुपया है। लोटा, धोती चुरानेवालों को जेल होती है तो पूरे देश और, जनता का धन चुरानेवालों को फाँसी होनी चाहिए।"[२१] आम गरीब आदमी इस भ्रष्टाचार का विरोध भी नहीं कर सकता था - जयदेव पुरी एक प्रसंग में कहता है - "मैं अकेला सदियों से लोगों के खून में समाई हुई बेईमानी को एकदम तो समाप्त नहीं कर दे सकता। हम लोग गन्दगी में पैदा हुए हैं तो कुछ तो गन्दी हवा मिलाने निगलनी पड़ेगी।"[२२]

शासकीय लोगों में व्याप्त भ्रष्टाचार को लेखक ने माथुर के कथन से स्पष्ट किया है। - "शक्ति और अवसर हाथ में होनेपर अनुचित लाभ न उठानेवाले मुझे तो केवल अपवादरूप ही दीखते हैं। लोगों को कान्स्टेबलों, चपरासियों और बाबुओं का रिश्वत लेना दिखाई देता है। मैं पूछता हूँ, शासन में चोटी से लेकर पाँव के अँगूठे तक कौन अनुचित लाभ नहीं उठा रहा है ? रिश्वत लेकर आदमी अपने बाल बच्चे और कुणबे को तो पालेगा ? मुझे बता दो, शासन संभाले लोगों में से किसका कुणबा नहीं पल रहा है ?"[२३] सरकारी नौकर उदाहरण देकर ही तो चलेंगे ? बड़े - बड़े होटलों में बड़े - बड़े अफसरों की ओर से जो शानदार दावतें होती हैं, उन सबका

धन कहाँ से आता है ? इस बारे में नरोत्तम कहता है - "यह सब खर्च व्यापारियों और उद्योग - धंदों के मालिकों के सिर चलते हैं। उन्हें पाँच सौ खर्च करके एक परमिट या एक लाइसेन्स मिल जाये तो समझो दफ्तर जाने के लिये टैक्सी का किराया दे दिया। ऐसी पार्टियाँ व्यवसाय का ढंग मात्र है ईमानदारी की कमाई से यह खर्च नहीं चल सकते।" २४

** नारी समस्या :-

उसवक्त के पूँजीवादी समाज ने नारी को केवल भोग्य वस्तु मात्र माना था नारी की मानसिक पीड़ा, विवशता का विचार कोई नहीं करता था। लेखक ने "झूठा - सच" में नारी परतन्त्रता का विरोध किया है। यशपाल ने नारीविषयक अपने मत को तारा, कनक जैसे प्रमुख पात्रों द्वारा नारी - मुक्ति तथा नारी - समानता की बात से स्पष्ट किया है।

तारा, उर्मिला, कनक, सीता, शीलो, मर्सी आदि के चरित्रों द्वारा लेखक ने नारी की समस्याओं को स्पष्ट किया है। लेखक ने तारा के चरित्र द्वारा नारी जीवन की सभी व्यथाओं का चित्रण किया है। - विभाजन के समय नारी की जितनी दुर्गति हुई उतनी कभी नहीं हुई। उस समय हिन्दू तथा मुसलमान दोनों सम्प्रदायों की औरतों को अपमान, उपेक्षा, शारीरिक कष्ट, मानसिक पीड़ा सहनी पड़ी। विभाजन के समय नारीयोंका अपहरण किया गया, उन पर बलात्कार किया गया, उनके कोमल और सौन्दर्य सर्जक अंग काटे गये; इतना ही नहीं एक पदार्थ की भाँति पूर्ण नग्न करके उनका जुलूस निकाला। जब पुरी लुधियाना से फीरोजपुर जा रहा था तब मोगा स्टेशन पर उसके डिब्बे में चार - पाँच जाट दो लड़कियों को घसीटकर ले आये। उसने देखा लड़कियों की दशा बुरी हो रही थी। लड़कियाँ देहाती मुस्लिम परिवारों की लग रही थीं। पुरी अपने माँ - बाप की खोज करने फिरोजपुर गया था, तब एक दिन उसने एक जगह काफी भीड़ देखकर जिज्ञासावश वहाँ क्या हो रहा है देखने गया - उसका सिर लज्जा से झुक गया जब उसने देखा की मुस्लिम लड़कियों को तमाशे की चीज बना दिया

गया है। उसने देख कि भीड़ के बीचोबीच एक आदमी चोटी से पकड़ - पकड़कर निर्वस्त्र लड़कियों को नीलाम कर रहा था। सब लड़कियाँ मुसलमान थीं।"

पाकिस्तान के शेखपुरा में भी नारी की यही स्थिति थी। वहाँ किसी गुण्डे द्वारा हिन्दू स्त्रियों को एक मकान में इकट्ठा किया जाता और बाद में बेच दिया जाता। उन स्त्रियों को न पहनने के लिये पूरे वस्त्र दिये जाते थे और न खाने को पूरा भोजन। जब तारा को उस मकान में लाया गया तो उसने स्त्रियों की दुर्दशा देखी। बन्तो नामक स्त्री ने अपने व्यथापूर्ण अनुभव तारा को बताये - जब वे गाँव से आ रहे थे, तब उसकी जवान ननद को मुसलमानों ने छिन लिया था। उस दिन मुसलमान तीन जवान औरतों और तीन कुँआरी लड़कियों को पकड़कर ले गये थे।" [२५]

विभाजन के समय विधर्मियों ने तो नारी की अवहेलना की ही थी; परिवार तथा पति से बिछुड़ी हुई नारी या पत्नी का बाद में अस्वीकार किया गया। लेखक ने "झूठा - सच" में चिन्ती तथा बन्तो के चरित्र द्वारा यह समस्या स्पष्ट की है। - हिन्दू स्त्रियों की उद्धारक कौशल्यादेवी ने पाकिस्तान में शरणार्थिक कैम्प में चिन्ती नामक स्त्री को रोते देखा, तो उसने रोने का कारण पूछा - तो दूसरी स्त्री ने कहा - पेक्के [माँ - बाप] इसे नहीं ले गये॥ कह दिया हमने तो ब्याह दी थी, अब वह ससुरालवाले जाने उन्होंने एक बार निब्बे [निबटा] दिया।" [२६] चिन्ती के माँ - बाप ने उसे ठुकरा दिया तो बन्तो को ससुरालवालों ने - पति तथा सास द्वारा अस्वीकृत होने पर बन्तो ने उसी घर की दहलीज पर माथा पटक - पटककर प्राण दे दिये। इससे लेखक को यह कहना है कि विभाजन के वक्त नारी स्वेच्छा से किसी के साथ भागकर नहीं गयी थी, तो उसे जबर्दस्ती उठाकर ले गये थे। ऐसी स्थिति में उन नारियों को अपने परिवारवालों के स्नेह की जरूरत थी लेकिन यहाँ परिस्थिति उल्टी ही थी।

देश विभाजन के समय नारियों की ऐसी दशा देखकर एक स्त्री ने दु:ख से कहा - "हिन्दनी हो चाहे मुसलमानी, जो अपनी इज्जत लिए मर गई, वही सबसे अच्छी रही औरत के शरीर की तो बरबादी है। औरत तो ढोर बकरी है, जो चाहे छीन ले जाए।" [२७] इसतरह यशपाल ने "झूठा - सच" में नारी की विभिन्न समस्याओं का यथार्थ तथा मार्मिक चित्रण किया है।

** शरणार्थियों तथा रिफ्यूजी कैम्पों की समस्या :-

विभाजन होने के बाद पाकिस्तान से हजारों हिन्दू भारत की ओर तथा हजारों मुसलमान काफीले बनाकर पाकिस्तान की ओर चले जा रहे थे। अत: इन काफिलों पर बीच रास्ते में ही हिन्दुओं के काफिलों पर मुसलमानों ने आक्रमण करके हजारों हिन्दुओं की हत्या कर दी। तो मुसलमानों के काफिलों पर हिन्दुओं ने आक्रमण करके हजारों मुसलमानों की हत्या कर दी थी। उपन्यास में लेखक ने इन शरणार्थियों की समस्याओं का बड़ा सजीव चित्रण किया है।

विभाजन के बाद पाकिस्तान सरकार ने हिन्दुओं को पाकिस्तान से निकालने के लिये, उन्हें शरणार्थी कैम्पों में इकट्ठा करना शुरू किया। पाकिस्तान में शेखपुरा, लाहौर, गुंजरांवाला आदि प्रमुख स्थानों में हिन्दुओं को उनके घरों से, उनकी सुरक्षा का बहाना बनाकर निकाला गया और कैम्पों में रखा गया, बादमें उनके घरों में भेजने तथा सुरक्षा का उपाय करने की अपेक्षा उन्हें हिन्दुस्थान जाने के लिए मजबूर किया गया ताकि रास्ते में उनकी मुसलमानों द्वारा हत्या कर दी जाए।

यशपाल ने "झूठा - सच" में हिन्दुओं का पाकिस्तान से तथा मुसलमानों का हिन्दुस्तान से विस्थापन, इन काफीलों पर रास्तों में होनेवाले आक्रमणों, मरनेवालों की लाशों का सड़कपर ही महीनों सड़ते रहना आदि

का भयानक तथा यथार्थ चित्रण किया है। जयदेवपुरी जब लुधियाना से फिरोजपुर जा रहा था तब मोगा स्टेशन पर उसने देखा- स्टेशन वीरान है। प्लेटफार्म पर जगह - जगह खून फैला हुआ है। लाशें पड़ी हुई हैं।[२८]

लेखने लेखक ने काफीलों की दयनीय स्थिति का बड़ा सजीव चित्रण किया है, जिससे विभाजन की भयानकता स्पष्ट होती है। - तारा जब पाकिस्तान से लौट रही थी, तब मुसलमानों का एक काफिला पाकिस्तान जा रहा था। बसों के दोनों ओर लंगड़ाती हुई भीड़ बढ़ती जा रही थी। कतरी और जली हुई दाढ़ियाँ, दबी हुई टोपियाँ, रस्सी की तरह लपेटी हुई मैली पगड़ियों में से झांकते मुँडे हुए सिर, काले नीले चिथड़े कपड़े। स्त्री - पुरुषों के चेहरे आँसुओं और पसीने में जमी हुई गर्द से ढके हुए थे। उबकाई पैदा करनेवाली भयंकर दुर्गन्ध मानों वे शरीर चलते - फिरते भी सड़ते गलते जा रहे हैं।[२९]

पाकिस्तानी क्षेत्र से आतंकित हिन्दू तथा पूर्वी पंजाब से मुस्लिम लाहौर पहुँच रहे थे। कुछ लोग सुरक्षा के लिये अपने रिश्तेदारों के पास गये, जिनके रिश्तेदार नहीं थे उन्हें शरणार्थी कैम्पों की शरण लेनी पड़ी। "झूठा-सच" में लाहौर में हिन्दुओं के लिए स्थापित अनेक कैम्पों का वर्णन है॥ - एबट रोड पर रायबहादुर बद्रीदास कोठी में, शहालमी के बाहर रतनलाल के तालाब पर, मवाराम के शिवालय में, गुरुद्वारा शहीदगंज में, गुरुदत्त भवन के समीप कैम्प बना दिये गये थे।[३०] इन ~~असहाय~~ शरणार्थियों की अवस्था बहुत दयनीय थी। उनकी इस विवशता का लाभ सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ता उठा रहे थे। अकेली, /~~असहाय~~ असहाय नारी को अपनी इज्जत बचानी मुश्किल थी।

इन्हीं कैम्पों में शरणार्थी नारियों को सहारा और नौकरी दिलाने के बहाने देकर यह कांग्रेसी कर्मचारी तथा नेता लोग किसप्रकार फँसाते थे

इसका उदाहरण लेखक ने तारा पुरी तथा कनक के माध्यम से "झूठा - सच" में दिया है॥ दिल्ली शरणार्थी कैम्प के इंचार्ज प्रसाद तथा उत्तर प्रदेश विधान - सभा के नेता अवस्थी जी ने मिलकर कनक तथा तारा को फँसाना चाहा, पर इन दोनों ने कड़ा विरोध किया।

पाकिस्तान से आनेवाले हिन्दू शरणार्थियों की उपस्थिति से स्थानीय लोगों पर कुप्रभाव पड़ेगा और साम्प्रदायिक सद्भाव कम होगा। इसी आशंका से यू. पी. सरकारने अपने प्रदेश में हिन्दू शरणार्थियों का प्रवेश निषिद्ध कर दिया था। परन्तु दिल्ली सभी को स्वीकार रही थी।

ऐसे कैम्पों पर होनेवाला खर्च सरकार देती थी, और उन्हें चलाते थे कुछ कॉंग्रेसी नेता और कुछ समाजसेवक। कैम्प के प्रत्येक शरणार्थी के लिये राशन की मात्रा निश्चित कर दी थी, अधिक माँगने पर राशन बाँटनेवाला अपनी स असमर्थता व्यक्त करता - भाई, फी आदमी डेढ़ पाव आटा और छटाँकभर दाल का ही आर्डर है। जो यहाँ आयगा, उसी को मिलेगा।" [३१]

सहायता तथा पुर्नवास विभाग के मंत्री सक्सेना ने इन शरणार्थियों के फायदे के लिये एक नयी नीति बनायी शरणार्थियों को मुफ्त भोजन देने के बजाये, उनकी रुचिनुसार रोजगार पर लगाया जाए, इसके लिए आवश्यक कर्ज दिया जाए, औरतों को सीनें की मशीनें दिलवाने की व्यवस्था करवायी - पर वहाँ भी सरकारी इन्स्पेक्टर तथा कॉंग्रेसी कार्यकर्ता दोनों ने गरीब औरतों से मशीनें दिलवाने के लिये रिश्वत लेना शुरू किया। इसतरह लेखक ने ऐसे शरणार्थी कैम्पों की स्थिति, वहाँ के प्रबन्ध, शरणार्थियों की कठिनाइयाँ आदि का यथार्थ चित्रण "झूठा - सच" में किया है।

** धार्मिक तथा साम्प्रदायिक समस्या :-

प्रत्येक धर्म में कितनी विसंगतियाँ, अन्धविश्वास, रूढ़ी - परम्पराएँ हैं, जो जीवन में बाधा उत्पन्न करती है, इसका चित्रण "झूठा-सच" में लेखक

ने हिन्दू - मुस्लिम सम्प्रदायों के झगड़ों द्वारा किया है। ये दोनों धर्म एक दूसरे की विपरीत दिशा में है। "झूठा - सच" में यशपाल ने धार्मिक समस्या को तथा दोनों धर्मों में व्याप्त दूरी को हाफिज साहब के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

तारा अपने पति के घर से रात को निकल जाती हैं तो, साम्प्रदायिक उपद्रव के कारण एक नब्बू नाम के गुण्डे के हाथ पड़ती है, जिससे उसको भ्रष्ट किया जाता है, ऐसी स्थिति में तारा जीना नहीं चाहती, तारा का उद्धार करने के लिये हाफिज साहब को बुलाते हैं। तारा उनके साथ उनके परिवार में रहने लगती है। उनके परिवारवालों तथा हाफिजसाहब की नीति द्वारा लेखक ने हिन्दू धर्म तथा मुस्लिम धर्म पर प्रकाश डाला है।

हाफिज साहब हिन्दू धर्म पर बहुत से आरोप लगाते हैं, उनकी दृष्टि में मुस्लिम धर्म अधिक श्रेष्ठ तथा हिन्दू धर्म तुच्छ है। वे कहते हैं हिन्दू लोग औरत को खानदान की जायदाद मानते हैं। विधवा को पति की लाश के साथ जला देना पुण्य समझते हैं। इससे ज्यादा हैवानियत और क्या होगी ? हाफिज साहब हिन्दू धर्म के बारे में कहते हैं - "हिन्दू स्वभाव से शासक नहीं, बनिया होता है। आजादी का उसके पास कोई महत्व नहीं. हिन्दुओं में आजादी का जजबा है ही नहीं, न उन्हें आजादी की जरूरत है। . . . . हिन्दू में हुकूमत करने की काबिलियत और माद्दा नहीं होता। मुसलमान को खुदा ने हुकूमत करने के लिये ही पैदा किया है।[३२] हाफिज साहब का लक्ष्य था - इस्लाम को वैज्ञानिक धर्म सिद्ध करना।

विभाजन के लिये राजनीति को साम्प्रदायिकता ने अधिक साथ दिया था। इसी साम्प्रदायिकता का लाभ विदेशी शासन उठा रहे थे। इसका उदा. लेखक ने "झूठा - सच" में दिया है। - "एक पुलिस कान्स्टेबल ही रूप बदलकर दंगे का आरम्भ कर रहा था। इस समय प्रतिशोध की भावना साम्प्रदायिक नारों द्वारा उभर रही थी। - "बिहार को मत भूलो"

क्योंकि अक्तूबर ४६ को बिहार में बड़े पैमाने पर मुसलमानों का संहार हुआ था। इसी साम्प्रदायिक कट्टरता के कारण सारे देश में लूट - मार, अपहरण, छुरेबाजी, आगजनी मची - लेखक कहता है, "जब दिलों में इतनी आग है तो आग नहीं लगेगी तो क्या ? हिन्दू को मुसलमान और मुसलमान को हिन्दू नेस्तनाबूद कर देना चाहता है तो क्या नहीं होगा ? असेम्बली में परसों क्या पैसला हुआ, नहीं जानते ? वही तो इसकी जड़ है।" [३३]

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विभिन्न देशों में धर्म पारस्परिक विरोध के कारण मानवता के विकास के आड़े आता है, प्रस्तुत उपन्यास में भारत के विभाजन से उत्पन्न समस्याओं के मूल में भी यही धर्मान्धता रही थी। लेखक ने तारा द्वारा इस्लाम धर्म की तानाशाही को ठुकराकर धर्म की निस्सारता को स्पष्ट करके, लोकतंत्र को अधिक महत्त्व दिया।

**निष्कर्ष :-

देश - विभाजन के वक्त सारे देश में भयंकर संघर्ष हुआ, हत्याएँ, आगजनी की घटनाएँ घटीं, जिनमें लाखों लोग मारे गए तथा लाखों बेघर हो गए। यशपाल ने "झूठा - सच" प्रथम भाग में इन्हीं घटनाओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। वे इन सारी घटनोओं के लिये जिम्मेदार राजनैतिक नेताओं को मानते हैं। उन्होंने ही इस देश को धर्मों में बाँटा है।

"झूठा = सच" - प्रथम भाग के अन्त में लेखक ने स्पष्ट किया है। - "रब्ब ने जिन्हें एक बनाया था, रब्ब के बन्दों ने अपने वहम और जुलम से से उसे दो कर दिया।" [३४] विभाजन के वक्त नेताओं द्वारा गरीब जनता किस प्रकार त्रस्त थी इसको लेखक ने "पैरोकार" के सम्पादकीय लेख से स्पष्ट किया है। - "तुम्हारे [दीनू मामा के] कत्ल के लिये उत्तेजना दिलाने की जिम्मेदारी उन नेताओं पर है जो तुम्हारे जैसे इन्सानों को शासन के सिंहासन पर पहुँच सकने का जीना बनाने के लिये जनता का ईंट गारे की तरह प्रयोग करना चाहते हैं।" [३५]

यशपाल ने "झूठा - सच" में धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र को अधिक महत्त्वपूर्ण माना है। वे देश की जनता से पूछते हैं - "क्या हमारे सर्व साधारण स्वार्थ में अन्धे और क्रूर लोगों को स्वप्नों के महलों में पहुँचाने के जीने कब तक बने रहेंगे ? क्या सर्वसाधारण अपने नेताओं को मानवता की कसौटी पर जाँचकर नहीं परखेंगे ? क्या अपने कथ० स्वार्थों के लिये सर्वसाधारण को अन्धा बना देना ही धर्म की रक्षा प्रजातन्त्र और समाजवाद जनवाद है ?" [३६]

विभाजन के समय देश में व्याप्त सभी तरह के भ्रष्टाचारों को यशपाल ने "झूठा - सच" में प्रस्तुत किया है। यशपाल देश में जनवादी शक्तियों के कारण ही लोकतंत्र को, सुरक्षित समझते हैं। - इसको उपन्यास के अन्त में डा. प्राणनाथ के माध्यम से स्पष्ट किया है। - "गिल ! अब तो विश्वास करोगे, जनता निर्जीव नहीं है। जनता सदा मूक भी नहीं रहती। "देश का भविष्य" नेताओं और मंत्रियों की मुट्ठी में नहीं है, देश की जनता के ही हाथ में है।" [३७]

यशपाल ने "झूठा - सच" में देश विभाजन की समस्या के साथ - साथ प्रेम और विवाह की समस्या का भी यथार्थ चित्रण किया है। वैवाहिक जीवन की कठिनाइयाँ, रूढ़ीगत बाधाएँ आदि का विरोध करके लेखक ने एक नयी नीति की स्थापना की है। उनका मत है विवाह एक दूसरे के परस्पर प्रेम - विश्वास तथा वैचारिक समानतापर आधारित हो।

देश विभाजन की समस्या को प्रस्तुत करने का लेखक का दृष्टिकोण केवल कल्पना पर आधारित नहीं तो, द्वितीय महायुद्ध, स्वतंत्रता प्राप्ति तथा देश विभाजन से उत्पन्न आबादी परीवर्तन, रूढ़ी - रिवाजों, धर्मान्धता की आड़ में छिपे अमानवीय कृत्यों, नेताओं के राजनीतिक स्वार्थों, विभाजन से उत्पन्न विस्थापितों की साम्प्रदायिक, समस्या आदि को एक ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने काल्पनिक पात्रों द्वारा ऐतिहासिक यथार्थ को चित्रित करने का प्रयास किया है। उपन्यास में ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम मात्र लिये गये हैं। जैसे, नेहरू, पटेल, जिन्ना आदि। इससे घटनाएँ अवास्तविक नहीं लगती। कथानक में कुछ ऐतिहासिक घटनायें हैं, परंतु पूरा कथानक काल्पनिक है, ऐतिहासिक नहीं।

लेखक ने "झूठा - सच" में ऐतिहासिकता का आधार लेकर राजनैतिक घटनाओं का यथातथ्य वर्णन किया है। - पंजाब का अँग्रेज गवर्नर जेकिन्स किसप्रकार राजनैतिक समस्याओं को उलझा रहा था, खिजर का त्याग पत्र देना, उसके त्याग पत्र देने के बाद गवर्नर का किसी भी दल का मंत्री-मंडल न बना देने का प्रयत्न तथा उसमें उनकी सफलता, पंजाब असेम्बली के बाहर मास्टर तारासिंह का तलवार खींच कर मुसलमानों को ललकारना तथा पाकिस्तान न बनने देने की बात कहना, पाकिस्तान के अस्तित्व में आने के बाद हिन्दुओं को बलपूर्वक घरोंसे निकाल कर कैम्पों में रखना, उनके सामान की लूट, निर्दोष नारियों का अपहरण, बलात्कार, गाड़ियों में यात्रियों की हत्या आदि घटनायें इतिहास की प्रसिद्ध घटनायें हैं।

लेखक ने इन राजनैतिक घटनाओं की ऐतिहासिकता प्रकट करने के लिये सही तिथियों का विवरण किया है। जैसे, तेरह अगस्त के समाचार पत्रों में समाचार छपा कि लार्ड माउंटबैटन कल सुबह कराची जाकर दस बजे पाकिस्तान सरकार को शासन - सत्ता सौंप देंगे। चौदह अगस्त रात के बारह बजने पर पाकिस्तान के गवर्नर जनरल कायदे आजम जिन्ना हो जाएंगे। तथा १६ अगस्त १९४६ को "प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस" संबंधी घोषणा ने साम्प्रदायिक वातावरण में आग लगा दी आदि वर्णन ऐतिहासिक सिद्ध होते हैं।

लेखक ने "झूठा-सच" में विभाजन के समय घटित ऐतिहासिक घटनाओं को पारिवारिकता में परिवर्तित किया है। लेखक ने एक गरीब परिवार के भाई - बहन पुरी तथा तारा के कथानक द्वारा राजनीतिक पृष्ठभूमि को चित्रित किया है।

यशपाल जी ने देश - विभाजन से उत्पन्न परिस्थितियों का व्यक्ति एवं समाज के जीवन में होनेवाले आन्तरिक एवं बाह्य परिवर्तनों को आधार बनाकर ऐतिहासिक यथार्थ को एक व्यापक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास "झूठा - सच" में किया है।

oooooooooooo

-: संदर्भ - सूची :-

१.	यशपाल,	"झूठा सच"	प्रथम भाग	पृ. २६३
२.	यशपाल,	"झूठा सच"	प्रथम भाग	पृ. ७९-८०
३.	यशपाल,	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. ८०
४.	यशपाल,	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. ८९
५.	यशपाल	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. २६२
६.	यशपाल	"झूठा व सच"	प्रथम भाग	पृ. २४८
७.	यशपाल	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. २९५
८.	यशपाल	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. २४६
९.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. २७२
१०.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. ३८३
११.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. ३१९
१२.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. ३८९
१३.	यशपाल	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. ७२
१४.	यशपाल	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. ७९
१५	यशपाल	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. ८८
१६.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. ३८२ - ३८३
१७.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. ३८३ -
१८.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. ५१७
१९.	यशपाल	"झूठा - सच"	"	पृ. ५२०
२०.	यशपाल	"झूठा - सच[	प्रथम भाग	पृ. २६
२१.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. ३४१
२२.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. ३४१
२३.	यशपाल	"झूठा - सच[	द्वितीय भाग	पृ. ३८२-३८३
२४.	यशपाल	"झूठा - सच"	"	पृ. ५४४
२५.	यशपाल	"झूठा - सच"	प्रथम भाग	पृ. ४८०
२६.	यशपाल	"झूठा - सच"	द्वितीय भाग	पृ. १०७

२७. यशपाल "झूठा सच" प्रथम भाग पृ. ३८९

२८. यशपाल "झूठा = सच" प्रथम भाग पृ. ४५२

२९. यशपाल, "झूठा - सच" प्रथम भाग पृ. ५११

३०. यशपाल, "झूठा - सच" प्रथम भाग पृ. ३१९

३१. यशपाल, "झूठा - सच" प्रथम भाग पृ. ४७२

३२. यशपाल, "झूठा - सच" प्रथम भाग पृ. ४०४ - ४०७

३३. यशपाल, "झूठा = सच" ,, पृ. ५२२

३४. यशपाल, "झूठा-सच" प्रथम भाग पृ. ५१६

३५. यशपाल, "झूठा -सच" प्रथम भाग पृ. १३१

३६. यशपाल, "झूठा - सच" द्वितीय भाग पृ. ५३१